

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

अप्रैल - I - 2023



अंक - 01

माउण्ट आबू

Rs.-12

कार्यक्रम : व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़े लोगों के लिए ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'रिट्रीट'

जीवन में बिना संतुलन सफलता और विकास नहीं

श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी ही वास्तव में है सर्वश्रेष्ठ - ब्र.कु. गीता

'बैलेंसिंग लाइफ विद ब्लिसफुल सेल्फ' सम्मेलन

1500 से अधिक व्यापार और उद्योग जगत से जुड़ी हस्तियों ने लिया लाभ

पैनल डिस्कशन के माध्यम से आध्यात्मिकता से जुड़े कई विषयों पर हुई गहन चर्चा

सभी को राजयोग का विशेष अभ्यास कराया गया

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'बैलेंसिंग लाइफ विद ब्लिसफुल सेल्फ' विषय पर आयोजित



सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए फरीदाबाद के एसडीएम पंकज सेतिया। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी एवं सम्माननीय अतिथिगण।

त्रिदिवसीय सम्मेलन में व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़ी अनेक हस्तियों ने शिरकत की। दादी प्रकाशमणि सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू से आई मुख्य वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी ने कहा कि आज प्रतियोगिता के इस दौर में तनाव होना संभव है। लेकिन अगर हम जीवन में संतुलन बनाकर चलते हैं तो सहज ही तनाव मुक्त रह सकते हैं। जिसके लिए सबसे जरूरी है आध्यात्मिक शक्ति। शांति, धैर्य और आंतरिक शक्ति आध्यात्मिक ज्ञान और योग से ही प्राप्त होती है। दीदी ने कहा कि भौतिक सम्पत्ति

के साथ-साथ अच्छे शब्दों की सम्पत्ति भी जरूरी है। श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी ही वास्तव में सर्वश्रेष्ठ है। समय सबसे बड़ा धन है। स्थूल धन चला भी जाए तो दोबारा कमा सकते हैं, लेकिन समय रूपी धन दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता।

मूल्यनिष्ठ व्यापार से ही होगा सुखहाल जीवन

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि व्यापार और उद्योग की हमारे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका है। हमारी संस्कृति दैवी संस्कृति रही है। जिसके मूल में दाता पन की

भावना प्रमुख है। लेकिन आज ज्यादातर जगह शोषण की प्रवृत्ति बढ़ गई है। व्यापार अगर मूल्यनिष्ठ होगा तो खुशी होगी। जहां मूल्य हैं वहां सफलता अवश्य होती है। संस्थान के फरीदाबाद स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. उषा दीदी ने कहा कि योग से ही जीवन में संतुष्टि आती है। आज बहुत से उद्योगपतियों ने योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया है। साथ ही अपनी इंडस्ट्री में उन्होंने विशेष राजयोग कक्ष भी बना रखा है। ब्र.कु. ख्याति बहन ने बताया कि सम्मेलन का उद्देश्य सभी को राजयोग द्वारा संतुलित जीवन शैली सिखाना है।

इन्होंने भी साझा किए अपने अनुभव

फरीदाबाद के एसडीएम पंकज सेतिया ने कहा कि कार्य तभी अच्छा होता है, जब हम आनंदित होते हैं। खुशियों के साथ किया हर कार्य सबको खुशियां प्रदान करता है।

सुनील हेल्थ केयर लिमिटेड के अध्यक्ष अनिल खैतान ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज ने हमें उद्योग में योग सिखाया है। सकरनी प्राइवेट लिमिटेड के एमडी डॉ. अशोक गुप्ता ने कहा कि आज हम दुनिया के बारे में तो जानते हैं लेकिन स्वयं को नहीं जानते। संतुलित जीवन जीने के लिए स्वयं का ज्ञान जरूरी है।

ऑल इंडिया फोरम ऑफ एमएसएमई के राष्ट्रीय महासचिव अनिल चौधरी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आने के बाद मेरी माताजी के जीवन में एक अद्भुत परिवर्तन आया। जिस कारण उनके दृष्टिकोण में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ और सबके साथ उनका व्यवहार बहुत अच्छा होता चला गया।

ब्र.कु. हरीश भाई ने प्रभाग के सेवाओं की जानकारी दी। ब्र.कु. अंजली ने सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. सुरेंद्र ने सबका धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. अमृता एवं ब्र.कु. पूनम ने किया।

परिस्थिति में रिएक्ट के बजाए रिसॉन्ड करना सीखें - ब्र.कु. शिवानी



ओम शांति रिट्रीट सेंटर में आयोजित सम्मेलन में व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़े लोगों को सम्बोधित करते हुए सुप्रसिद्ध जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में रिएक्ट करने के बजाए रिसॉन्ड करना सीखें। योग हमें सिखाता है कि हमें किस प्रकार रिसॉन्ड करना है। योग मन को संयमित रखता है। योग की स्थिति का प्रभाव हमारे दिन भर चलने वाले कार्य व्यवहार पर पड़ता है। दीदी ने कहा कि बीमारियों का प्रमुख कारण मन के नकारात्मक और अनियंत्रित विचार हैं। आज हम शरीर का इलाज तो करते हैं लेकिन मन के विचारों की क्वालिटी को ठीक नहीं करते। आध्यात्मिकता हमारे विचार और दृष्टिकोण में परिवर्तन लाती है। आध्यात्मिकता हमें रिएक्शन के बजाए रिसॉन्ड करना सिखाती है। उन्होंने कहा कि कोई भी परिवर्तन पहले एक से शुरू होता है। इसलिए दूसरों को बदलने के बजाए पहले स्वयं को बदलना जरूरी है। हर रोज सुबह उठते ही



ईश्वर का धन्यवाद करना जरूरी है। प्रकृति के साथ अच्छा रिश्ता बनाने के लिए रोज उसका शुक्रिया करें। प्रकृति का ध्यान रखने से प्रकृति हमारा ध्यान रखती है। प्रकृति के संसाधनों का उतना ही उपयोग करें जितना जरूरी है। प्रकृति का सम्मान ही हमारी प्रकृति को स्वस्थ रखता है।

बदलने की आवश्यकता है

कोई भी पुरुषार्थी सोच सकता है कि जो भी ऊँची-ऊँची बातें हैं, उसकी पहुंच से बाहर हैं और अभी तो वो उससे काफी दूर है। कोई तो ये भी कहेंगे कि ये आदर्श है, ये व्यवहारिक नहीं है, वे ऐसी गगनचुंबी अवस्था में अथवा स्थिति के शिखर पर कैसे पहुंचेंगे। उनका मन जो बार-बार मैला हो जाता है, उस धूल-मिट्टी अथवा कचरे-कीचड़ में कैसे बचा रहे? वे कहेंगे कि उनकी दृष्टि पर तो दूसरों के अवगुणों का चश्मा चढ़ा ही रहता है या उनके दुर्गुण उनकी आँख में धूल के कंकड़ की तरह चुभते ही रहते हैं। आखिर उन्हें आँखें तो खुली रखनी हैं, तब उनकी दृष्टि कैसे निर्मल बनी रहे? ये प्रश्न हरेक के लिए उपयोगी हैं।

इनके पीछे दृष्टि और वृत्ति को बदलने की चेष्टा है, यह चेष्टा संकेत देती है कि उनकी पुरुषार्थ करने की नीयत तो है। ऐसे लोग उन लाखों-करोड़ों से अच्छे हैं जो अपनी वृत्ति-दृष्टि को बदलने की कामना ही नहीं करते। अपनी हालत खराब कर बैठने के बावजूद भी वे इस खराबी के स्वाभाविक होने की बात करते हैं और तर्क-वितर्क से युक्ति-संगत बताते हैं। ऐसे लोगों का बदलना तब तक असंभव है जब तक उन्हें यह एहसास ही नहीं होता कि हमें स्वयं को बदलना चाहिए। बदलना आवश्यक है, बदलने के बिना हमारी गति ही नहीं है। आज बदलें या कल, बदलने के बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। मन की गहराई से यदि हम बदलना स्वीकार नहीं करेंगे तो परिस्थितियां हमें बदलने पर मजबूर कर देंगी। तब यदि हम न बदले तो फिर हम स्वयं को मनुष्य की कोटि में न समझें।

कुत्ता एक ऐसा पशु है जिसकी पूंछ सदा टेढ़ी बनी रहती है। कहते हैं कि एक मनुष्य ने वर्ष भर कुत्ते की पूंछ को लोहे की नली में सीधा कसकर रखा, उसने सोचा एक वर्ष काफी होता है, अब तो यह पूंछ सीधी हो ही गई होगी। इस दौरान कुत्ता चिल्लाता भी था तो भी उसने उसकी पूंछ पर से नली नहीं हटाई। पर वर्ष बाद जब हटाई तब तो यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि कुत्ते की पूंछ तो वैसी ही टेढ़ी है! ऐसे ही कुछ लोग बदलना ही नहीं चाहते। उनके बारे में तो कहेंगे कि 'अल्लाह ही खैर करे!' 'खुदा हाफिज उन्हें खौफ-ए-खुदा ही नहीं है।' जो धर्मराज से ही नहीं डरते, वे धर्मात्मा लोगों से कहाँ डरेंगे!

जो बदलना चाहे उनके लिए कल्याणकारी प्रभु ने अनेक विधियां, युक्तियां अथवा उपाय बताये हैं जिनसे उनकी आत्मा में घुसे हुए संस्कार बाहर निकल जाएं और उनका पीछा छोड़ दें। उन सबका तो यहां उल्लेख करना संभव नहीं है, परंतु एक ऐसी बात को यहां हम लिपिबद्ध करना चाहेंगे जो कि किसी अंश में हमारी दृष्टि, वृत्ति और कर्म को विकृत होने से बचा सकती है। वो ये है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निंदा-चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाहें सुनकर उसे तुरंत मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, 'अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा ही नहीं था।' हम इस बात की जांच नहीं करते बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वास-पात्र है, हमारे निकटतम हैं, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरी घोंपते हैं। चाहे व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने भी लगते हैं कि 'अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति का तो फलाना से लगाव-झुकाव है। वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा दिखाता है और वाचाल है। बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे के लिए उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पत्थर बांधकर पानी में उतरेगा तो डूबेगा ही। उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।' जब ऐसी दृष्टि हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वो स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है, गोया अपने ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को जिंदा जलाने के लिए चिता की लकड़ियां स्वयं चुनकर लाता है और उनकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथों से लगाता है, उसे किसी करनीधोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। इस तरह अगर हमने अपने पर ध्यान नहीं दिया तो हमारी स्मृति भ्रंस हो जायेगी और जिसकी स्मृति ही भ्रंस हो जाये, तो गीता के महावाक्य हैं, 'उनकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उनका तो सर्वनाश हो जाता है।



स्व.क. गंगाधर

मन की मौजों को त्याग अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो

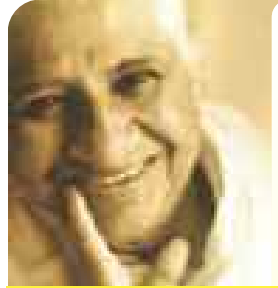
अपनी स्थिति अडोल हो, व्यवहार कुशल हो। आपस में बहुत स्वीट व्यवहार रखो लेकिन किसी की स्वीटनेस से प्रभावित न हो जाओ। यहाँ पर सेफ्टी चाहिए। यह बड़ा स्वीट है, नहीं। ऐसे नहीं यह स्वीट है तो आप मक्खी बन जाओ। मधु भले बनो पर मक्खी नहीं बनो। अपने को भी स्वीट बनाओ। बाबा ने कोई हठयोग नहीं दिया है कि आपस में नहीं हँसों, हँसों, बहलो, खुशी में नाचो परंतु पर्सनल किसी के साथ हँसना, बहलना यह रॉना है। मुझे पर्सनल सर्विस चाहिए, सेंटर चाहिए, साथी चाहिए... यह रॉना है। परिवार से इंडिपेंडेंट नहीं रहो। हम सब एक-दूसरे पर डिपेंड हैं। कोई-कोई कहते हैं हम तो मॉडर्न हैं। हम मॉडर्न रहना चाहते हैं लेकिन ब्र.कु. माना बैकुण्ठ के वासी। वह मॉडर्न नहीं रह सकते। मॉडर्न तो रावण के हैं। बाबा ने हमें सफेद ड्रेस पहनना सीखा दिया, प्युरिटी में रहना सीखा दिया। प्युरिटी में रहना ही हमारे लिए मॉडर्न रहना है। बाबा ने पुरानी दुनिया के मॉडर्न से निकाल दिया। हम तो स्वर्ग के मॉडर्न उसके मॉडल बन रहे हैं। किसी भी प्रकार का शौक है- चाहे पार्टियों में जाने का, चाहे दूर-दूर जाकर पिकनिक आदि करने का... यह सब शौक योग

की स्थिति से नीचे ले आयेगे। यह योग की स्थिति में बाधक है। जितनी मर्यादा रखो उतना अच्छा है। आज माया नहीं है, कल किसी भी घड़ी माया आ सकती है। इसलिए एक-दूसरे से प्राइवेट पत्र व्यवहार न रखो। प्राइवेट लेन-देन न करो। यह सब धारणाएँ बनाओ। नियम-संयम ही जीवन का आदर्श है। जितना प्यारे बनो उतना

हम सबका टाइटिल है ब्र.कु.राजयोगी। जब कभी थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता-तो उसके दो कारण होते-एक तो अपने को सदा राइट समझते, और दूसरे को रॉना समझ लेते। जब ऐसी भावना दिल में पैदा होती है तब टक्कर होती है। जैसे बाबा ने गुरु गद्दी नहीं दिया, ऐसे किसी को बॉस नहीं बनाया। कोई बड़ा कोई छोटा नहीं। व्यवहार में

कमी होती है तब एक-दूसरे का संस्कार आपस में टकराता है। इसके लिए बहुत सहज विधि बाबा ने सुनाई है "पहले आप" का पाठ पक्का रखो। यह एक ऐसी विधि है जिससे सब अपने बन जाते हैं। पहले मैं- यह दूर करता, पहले आप- यह पास ले आता। दूसरा जैसे बाबा जो कहे हों जी करते, ऐसे एक-दूसरे को भी हों जी करो। ना कभी नहीं करो। ओ.के. कहते चलो तो सब मन ओ.के. हो जायेगा। हरेक का उत्साह बढ़ाओ। उत्साह दूसरे के मन को प्रफुल्लित करता है। इसके लिए अपना सब कुछ त्याग चाहिए। बाबा ने हमें अष्ट शक्तियाँ दी हैं, उसमें सहनशीलता की शक्ति भी विशेष है। कोई भी बड़ा बना है तो उसने दुनिया की अनेक बातों को सहन किया है। तो हम भी जब एक-दूसरे की छोटी-छोटी बातों को सहन करेंगे तब प्यारे बनेंगे।

एक बात की सबसे रिवेस्ट करती हूँ- ईश्वरीय मर्यादाएँ हम सबका धर्म है, इन्हें कभी भी लूज नहीं करो। माया को कहीं से भी घुसने न दो। हम मन मौजी नहीं हैं, बाबा के मौजी हैं। इसलिए मन की मौजों को त्याग दो। और बाबा के अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

न्यारे बनो। जितना नियमों का पालन करेंगे उतना स्वधर्म की स्थिति में अच्छे रहेंगे।

हम सबका एक ही लक्ष्य है, हम एक परिवार के हैं। प्रेम के व्यवहार को जानते हैं, यहाँ न कोई गुरु की गद्दी है, न कोई शिष्य है। किसी भी स्थान पर किसी का नाम नहीं है। न प्रॉपर्टी का झगड़ा है, न कुर्सी का झगड़ा है।

सिर्फ निमित्त मात्र रहते। जब स्व का भाव छोड़ देते, मधुर बोल नहीं बोलते, थोड़ा कड़वा बोल निकलता तब टक्कर शुरू होती है। क्योंकि कटुवचन दूसरे को कांटे की तरह पिंच होता है। इसके लिए स्व के भाव में रहो, स्व के अभिमान में नहीं आओ। दूरदेशी बनो लेकिन दिमाग का नशा नहीं रखो, स्वार्थी नहीं बनो। जब इन्हीं बातों की

शुद्ध संकल्पधारी समर्थी का स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई दे

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कोई भी बात मुश्किल तब लगती है जब माया वार करती है। हम सबका यह लास्ट जन्म है। तो लास्ट जन्म में सारा ही 63 जन्म का हिसाब-किताब चुकू होना है फिर चाहे योगबल से करो, चाहे बीमारी द्वारा करो, चाहे सहनशक्ति द्वारा करो। तब ही बाबा के साथ घर जा सकेंगे और साथ में फर्स्ट जन्म में भी आ सकेंगे।

समस्या को परिवर्तन करके समाधान स्वरूप बनने के लिए स्वयं में शक्ति भरनी है। अपने को शिवशक्ति समझेंगे तो कभी भी नरम स्वभाव, रोना, रूसना... इस प्रकार की कोमलता नहीं होगी। तो अपने को छोटी व कुमारी या पुरुषार्थी नहीं समझना। कुमारी है तो कोमलता है। अभी तो बाबा का स्थान मिल गया, बाबा की गुरु भाई बन गई, तो अभी कर्मों की गति को ध्यान में रखते हुए बहुतकाल से तीव्र पुरुषार्थी की स्थिति होनी चाहिए। बहुतकाल के पुरुषार्थ के विजयी क्योंकि हम जो भी कुछ करते हैं, उसका हिसाब तो बन ही जाता है। गलती की तो दण्ड का भी हिसाब है।

ज्ञान के प्वाइंट केवल रिपीट नहीं करो, लेकिन शुद्ध संकल्पधारी समर्थी का स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई दे। ज्ञान का मनन करके उसी में मगन हो जाओ अर्थात् भिन्न-भिन्न ज्ञान के प्वाइंट में मन स्थिर हो जाये। मनन करना अलग है, रिपीट करना अलग है, वो भी अच्छा है। अलग-अलग टाइम पर अलग-अलग टॉपिक के प्वाइंट पर मनन

करते मगन हो जाओ। जैसे योग की सब्जेक्ट में मनन करते-करते उस रूप में चले जाओ तो सारा व्यर्थ खत्म होता जायेगा।

कुछ भी करो लेकिन व्यर्थ संकल्पों को स्टॉप करो क्योंकि यही योग में बहुत डिस्टर्ब करते हैं। बाबा कहता है जो मैं जिस दिन कहता हूँ, उस ताजे माल में ताकत होती है, उसी दिन आप प्रैक्टिकल करो तो आपको हिम्मत भी मिलेगी, बाबा की मदद भी मिलेगी। बासी खाना खाने से तो बीमारी ही आयेगी।

माया भिन्न-भिन्न रूप में व्यर्थ लाती है, उस पर किस शक्ति से हम विजय पा सकते हैं, वो दोनों बातें अच्छी तरह से जानते तो हैं, परन्तु होता क्या है? उस समय वो याद ही नहीं आता है, समय पर शक्ति यूज करने नहीं आती है, इसके कारण बार-बार समस्याएँ व व्यर्थ संकल्प आते रहते हैं।

मानों मेरे सामने ऐसे पेपर आये या फलाने ने मेरे साथ यह किया, उस समय देखो क्या करना है? तो शक्तियों को यूज करो, उसका वर्णन करते रहो। आज समाने का पेपर दूँगी, तो उस समय क्या करूँगी... ऐसे यह मनन करते रहो और यूज करते रहो। यूज नहीं किया तो रिवाईज करो। यह करने से क्या फायदा होता है, यह न करने से क्या नुकसान होता है, ऐसे मनन करो। तो मनन करने से वो शक्ति आपके पास हमेशा हाज़िर रहेगी।

योगी बन करके खुद ही खुद को सहयोग दो

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा एक ही टाइम तीन काम करता है, एक तो विकर्म विनाश भी करता है, दूसरा माफ भी करता है फिर श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति बहुत देता है, इन तीनों बातों का मुझे तो बहुत अच्छा अनुभव है।

फालतू बात याद करके कर्म करने से कोई न कोई रॉना काम हो जायेगा, एक्ज्यूट नहीं होगा और याद में रहने से बाबा खुश, कर्म भी अच्छे होंगे। यह आँखें भूले देखने के लिए नहीं हैं, यह कान फालतू सुनने के लिए नहीं हैं। संस्कार अनुसार पहले मन-बुद्धि ऐसे चलती थी लेकिन अभी बदल गये हैं, अभी मन शान्त है, बुद्धि शुद्ध है। किसी घड़ी भी मन शान्त रहे, यह बहुत बड़ी बात है, ऑटोमैटिक बुद्धि क्या सोचे, शुद्ध रहने के संस्कार बन रहे हैं। किसी ने क्वेश्चन पूछा सकाश क्या है? सच्चाई और प्रेम की सूक्ष्म स्नेह भरी सकाश मिलती है। कोई भी बात है शरीर को कुछ होता है, सूक्ष्म ईश्वर सकाश चला रही है। सूक्ष्म ईश्वर स्वयं मेरे ऊपर राजी हो करके सकाश की शक्ति दे रहा है। राजी नहीं होगा तो सकाश नहीं देगा, कहेगा तुम्हारे कर्म तुम जानों क्योंकि पुरुषार्थ में अटेन्शन नहीं है, बाबा को राजी नहीं कर सकेंगे। ब्राह्मणों को सबसे बड़ा दुःख है अपमान का। इच्छा है मान की,

अब इनसे परे अभोक्ता बनो, स्वमान में रहो। मेरा कोई अपमान करो तो सोचो मेरी टेस्ट लेता है, ऐसे अन्दर ही अन्दर योगी बन करके अपने सहयोगी बनो, अपने को सहयोग दो। योग से सहयोग मिलता है। योग से अन्दर बाबा का सहयोग बहुत है। बाबा ने इतना रॉयल बनाया है इसलिए कभी किसी से सहयोग लेना नहीं पड़ा है, जब जो जरूरत हो वो आपही बाबा किसी न किसी के श्रु सहयोग देता है।

एक बारी बाबा ने टेस्ट लिया, कराची में बहुत अच्छा 56 प्रकार का भोजन बनवाया, सभी खाने के लिए बैठे थे, बाबा सबको देख रहा था, इतना अच्छा भोजन बना था सबने अच्छी तरह से खाया। रात को क्लास में पूछा कौन-सी चीज अच्छी थी? तो किसी ने कहा बाबा यह अच्छा था, तो बाबा ने कहा फेल। दूसरे दिन डायरेक्शन दिया अभी सिर्फ डोडा-छाछ मिलेगी। जिसको यह खाना हो वो रहे और जो समझे मैं बीमार हो जाऊंगा तो उनको दूसरे स्थान पर भेज दूँगा। जो नहीं होगा तो सकाश नहीं देगा, कहेगा तुम्हारे कर्म तुम जानों क्योंकि पुरुषार्थ में अटेन्शन नहीं है, बाबा को राजी नहीं कर सकेंगे। ब्राह्मणों को सबसे बड़ा दुःख है अपमान का। इच्छा है मान की, बाबा ने टेस्ट लिया।

मनुष्य को सबसे बड़ी देन है सदबुद्धि

स्व-परिवर्तन का कहो, विश्व परिवर्तन का कहो, सारा मदार स्मृति पर है। अगर स्मृति में हम पीछे रह गये या कमजोर रह गये, माना रह गये। न ज्ञान धारण होगा, न योग होगा और न दिव्यगुणों की धारणा होगी। इसलिए स्मृति-शक्ति और साथ-साथ उसकी धारणा-शक्ति चाहिए।

संसार में मनुष्य को सबसे बड़ी देन है सदबुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि जिसको बाबा कहते हैं पारस बुद्धि। बुद्धि कितनी बड़ी कमाल की चीज है! बाबा ने हमारे योग का नाम क्या कहा है? बुद्धियोग। बुद्धि जिसकी विशाल है, बुद्धि जिसकी शिव बाबा के साथ है वही सच्चा योगी है। योगी की बुद्धि शक्तिशाली निर्णय करती है। किस समय क्या करना है, कितना करना है, कैसे करना है, उसका यह निर्णय यथार्थ होगा और शक्तिशाली होगा। ऐसा निर्णय तभी होगा जब उसमें गोल्डन थॉट्स होंगे। एक न्यायाधीश निर्णय कैसे करता है? फलाने-फलाने कानून के अनुसार फलानी-फलानी सजा। इस फलाने सेक्शन के अनुसार इसने कोई गलती नहीं की इसलिए इसको बरी किया जाये। निर्णय किसी कानून के अंतर्गत किया जाता है। लॉ के एप्लिकेशन का नाम ही जजमेंट (निर्णय) है। नियम ही पता नहीं होगा तो निर्णय क्या करोगे? निर्णय शक्ति आपकी उतनी बढ़ेगी जितनी आपकी ज्ञान की शक्ति बढ़ेगी, जितने बाबा के गोल्डन थॉट्स आप में हैं, उतना अच्छा निर्णय आपका होगा। बाबा की जितनी भी मुरली की प्वाइंट्स हैं, ये हमारी निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए हैं, हमारी बुद्धि को गोल्डन बनाने के लिए हैं। लॉ को आप नहीं जानेंगे तो गलत निर्णय कर बैठेंगे। श्रीमत पूरी नहीं जानेंगे तो गलत इच्छाएं आ जायेंगी। गलत रास्ते पर चले जायेंगे। गलत कर्म हो जायेंगे और फिर पछताते रहेंगे। निर्णय हमारा शक्तिशाली हो, स्थिर हो, श्रीमत पर आधारित हो, ज्ञान से पूरा हो। कई लोग समझते हैं कि जो 8-10 नियम हैं वही श्रीमत है जैसे अमृतवेले उठना, मुरली क्लास करना इत्यादि। लेकिन इनके अलावा बाबा का हर महावाक्य श्रीमत है।

कई बार ज्ञान के बारे में निर्णय करने में लोग धोखा खा लेते हैं। कई सोचते हैं कि यह बात साकार बाबा ने कही है या निराकार बाबा ने कही है? हम मानते हैं कि शिव बाबा ही पढ़ाता है, कलियुग का अंत होने वाला है। मुझे याद है, साकार बाबा के साथ जब हम रहते थे, हमने देखा है कि कितने लोग धोखा खा



राजयोगी ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

गये! हमारे सामने जो मुरली चल रही है, यह साकार बाबा चला रहा है या निराकार बाबा चला रहा है— यह निर्णय करने में ही वे लोग धोखा खा गये। शिवबाबा भी बोलते हैं कि साकार को देख संशय में नहीं आना। अगर साकार से कोई गलती हो गयी, उसके लिए मैं जिम्मेवार हूँ। साकार से गलती होगी ही नहीं क्योंकि वो तो जो भी करेंगे, शिव बाबा की

श्रीमत अनुसार ही करेंगे ना! चलो, अगर हो भी गयी, गणित में कहते हैं सुपोज, उसके लिए मैं जिम्मेदार हूँ, उसको मैं ठीक कर देता हूँ। क्योंकि यह मेरा निमित्त माध्यम है। साकार को देख यह नहीं समझना, यह भी हमारे जैसा देहधारी है। इनके अंदर बैठकर मैं सुनाता हूँ, मैं डायरेक्शन देता हूँ। इसलिए आप यह मानकर चलें कि यह डायरेक्शन शिव बाबा ने ही दिया है, इनके द्वारा ही तुम बच्चों का कल्याण है। उन्होंने बाबा की यह बात नहीं मानी, तो धोखा खा गये और वे सारे खत्म हो गये। इसलिए मैं यह कहता हूँ कि रोज हम जो भी मुरली सुनते हैं, वो सारे हमारे लिए लॉ हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, अपने आप निर्णय करो, जज बनो। जब सारी बातें हम सुनें तो तब तो ठीक निर्णय कर पायेंगे ना! यह है हमारी निर्णय शक्ति।

उसी प्रकार है हमारी स्मृति-शक्ति। इसको लोग स्मरण-शक्ति कहते हैं। हमारा पुरुषार्थ यही है कि सदा हमारी ईश्वरीय स्मृति बनी रहे। स्मृति पारे की तरह खिसकती रहती है। यह बनी रहे एकरसा। मैंने पहले भी बताया है कि स्व-परिवर्तन का कहो, विश्व परिवर्तन का कहो, सारा मदार स्मृति पर है। अगर स्मृति में हम पीछे रह गये या कमजोर रह गये, माना रह गये। न ज्ञान धारण होगा, न योग होगा और न दिव्यगुणों की धारणा होगी। इसलिए स्मृति-शक्ति और साथ-साथ उसकी धारणा-शक्ति चाहिए। आपने देखा होगा कि कइयों में धारणा-शक्ति नहीं होती है। ज्ञान बहुत लेंगे लेकिन धारणा नहीं कर सकेंगे। हमें यह समझना चाहिए कि धारणा भी एक शक्ति है। यह बहुत बड़ी आध्यात्मिक शक्ति है। इससे हमें विश्व का राज्य-अधिकार मिल जाता है। योग बल से, पवित्रता के बल से और आध्यात्मिक वाणी के बल से।



वाराणसी-उ.प्र.। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू के वाराणसी आगमन पर उनसे मुलाकात के दौरान गुलदस्ता भेंट कर अभिवादन करते हुए ब्रह्माकुमारीज पूर्वी उ.प्र. एवं पश्चिम नेपाल की क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु.सुरेन्द्र दीदी, प्रबंधक राजयोगी ब्र.कु.दीपेन्द्र भाई, गोदौलिया सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दुर्गा बहन तथा ब्र.कु. राजू भाई।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर 'दया और करुणा के सागर हैं परमात्मा शिव' विषय पर आयोजित परिचर्चा में अपनी शुभकामनाएं देते हुए मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश के.के. त्रिवेदी। मंचासीन हैं जबलपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष प्रेम दुबे, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला दीदी तथा अन्य।



करेली-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के प्रभु उपहार भवन में महाशिवरात्रि के अवसर पर सभी धर्मों के धर्म आचार्यों का एक मंच पर सम्मान किया गया। इस मौके पर फादर वर्गिस, आचार्य राजेंद्र पुरी, गायत्री परिवार से आचार्य व अन्य धर्म प्रतिनिधियों सहित ब्रह्माकुमारीज की नरसिंहपुर जिला संचालिका ब्र.कु. कुसुम दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।



रतलाम-राजीव गांधी सिविक सेंटर(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष विप्लव जैन, नगर निगम पार्षद एवं एमआईसी सदस्य विशाल शर्मा, वरिष्ठ हाई कोर्ट एडवोकेट वी.ए. कटकानी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनोरमा दीदी, ब्र.कु. भारत सिंह चौहान, संस्था की सह संचालिका ब्र.कु. नीलम बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. आरती बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित शहर के अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



जिंतूर-महाराष्ट्र। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण एवं विशाल शिव संदेश व जन-जागरुकता रैली के शुभारंभ में शामिल हुए डॉ. पंडित दराडे, सर्जन डॉ. संतोष घुगे, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. जाधव, पत्रकार शेख शकील अहमद, पत्रकार और बीएलसीएन न्यूज चैनल से भागवत चव्हाण, पत्रकार महेश देशमुख, पत्रकार एवं न्यूज चैनल से सचिन रायपत्रेवार, पत्रकार अजमत पठाण, पत्रकार बाबा राज, पत्रकार संदीप माहुरकर, पत्रकार माबुद खान, पत्रकार गुलाबराव शिंदे, पत्रकार रामप्रसाद कंठाळे, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. नंदा, ब्र.कु. सोनू तथा अन्य भाई-बहनों।



निवाली-संघवा(म.प्र.)। थाना प्रभारी तारा मंडलोई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. छाया बहन एवं ब्र.कु. साधना बहन।



रतलाम-नजरबाग कॉलोनी(म.प्र.)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में 'हिन्दू धर्म समागम' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए आत्मानंद सरस्वती जी, दण्डी स्वामी मठ, मनोहर दास जी, श्रीमती वास हनुमान मंदिर, अनिल झालानी, समाजसेवी एवं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन।



धमतरी-छ.ग.। महाशिवरात्रि पर शिव दर्शन आध्यात्मिक मेले के दूसरे दिन शिवमय संगीत संध्या का आयोजन हुआ। जिसमें शहर के आठ मंडलियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में शहर के गणमान्य संगीतज्ञ, व्यापारी, न्यायविद आदि शरीक हुए। ब्र.कु. सरिता दीदी ने शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करते हुए परमपिता शिव परमात्मा की सभी को पहचान दी।



पुणे-रविवार पेठ(महाराष्ट्र)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर 'अमरनाथ दर्शन' की अद्भुत झाँकी लगाई गई, जिसमें अनेकों लोगों को त्रिमूर्ति शिव परमात्मा का सत्य परिचय दिया गया।



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

मुरली में बाबा स्वभाव, संस्कार का परिवर्तन के बारे में कितना कहता, समझाता है। ये बाबा हमारे में देखना चाहता है और वो भी धीरे-धीरे नहीं, अब तक तो हम धीरे-धीरे परिवर्तन करते रहे। लेकिन अब बाबा देखना चाहता है कि जितना तीव्र गति से समय परिवर्तन हो रहा है उतना ही तीव्र गति से हमें भी अपने आपको परिवर्तन करना होगा। तभी समय के साथ-साथ हम उस सम्पूर्णता तक पहुंच सकेंगे और उसके लिये बाबा ने तीन प्रकार के भाग्य हमें दिये हैं, वो सहायक हैं परिवर्तन करने के लिए। बाबा की पालना, शिक्षक के रूप में पढ़ाई और सत्गुरु के रूप में वरदान। बाबा भी चाहता है कि मेरा हर बच्चा समय से पहले तैयार हो जाये। तो कैसे करेंगे?

उसकी कुछ विधियां हमारे मन में जो आयी हैं- तो सबसे पहली बात कि परिवर्तन करने के लिए डीप रिअलाइजेशन की आवश्यकता है। हमारे अंदर अब कौन-सी कमजोरियां हैं? उसका डीप रिअलाइजेशन करना बहुत जरूरी है। कमजोरी है तभी तो यहाँ हैं, नहीं तो सम्पूर्ण होकर के चले गये होते। इसलिए कोई ये नहीं कह सकता कि मेरे में तो कोई कमजोरी नहीं है। अब दूसरा कोई हमें प्वाइंट आउट करता है कि आप में ये कमजोरी है तो हम उसको छिपाने की कोशिश करते, नहीं-नहीं कोई बात नहीं है ये ऐसा हो गया ना, इसलिए ऐसा हुआ। हम बहाना दे देंगे, लेकिन अंदर हर व्यक्ति जानता है कि मेरी ये कमजोरी है तो जानना काफी नहीं, मानना काफी नहीं लेकिन एक डीप रिअलाइजेशन करना। उसके बाद सोचो कि उस कमी के कारण क्या नुकसान हो रहा है। हर पहलू में चाहे सम्बंध-सम्पर्क हो, चाहे अपना पुरुषार्थ हो। हर बात में क्या नुकसान हो रहा है? इसका रिअलाइजेशन। उसके बाद बाबा की मुरलियों में हमें कौन-सी युक्तियाँ मिली हुई हैं। उसको चिंतन करते हुए बाहर

स्वयं को परिवर्तन करने की तीन विधियां...

कौन मुझे कह रहा है... ये मुझे रिअलाइज हो...

निकालना। प्रतिदिन की मुरली में कोई-न-कोई बात ऐसी जरूर आती है जो स्वभाव-संस्कार को परिवर्तन करने की एक युक्ति बाबा ने जरूर बताई हुई होती है और उसके बाद अब हम बाबा की मुरली की प्वाइंट को कैसे अप्लाई करें, वो तरीका सोचो। मेरे पुरुषार्थ में कैसे उसको अप्लाई करूँ ताकि ये कमजोरी सदा के लिए समाप्त हो जाये।

जब उसका प्रैक्टिकल एप्लीकेशन होगा तब आप देखेंगे कि विजयी बनना आपके लिए सहज है, लेकिन जो पुरुषार्थ करेगा वो ही विजयी बनेगा ना! बाकी तो ऐसा नहीं जो पुरुषार्थ नहीं करेगा वो भी विजयी बन जायेगा। वो तो नहीं बन सकेगा। तो इसलिए पहला-पहला ये रिअलाइजेशन करना बहुत जरूरी है।

आपका इनरकॉन्शियसनेस जो है, आपको जवाब दे देगा। कहते हैं ना, इनरकॉन्शियस, जो इनरवॉइस है वो कभी आपको गलत नहीं कहेगा। तो इसलिए ये सवाल अपने आप से करते रहो कि अगर बाबा साकार में होते और बाबा के सामने ये बात आती तो बाबा कौन-सी श्रीमत यूज करके इसको ऑवर कम कर लेते, उसको क्रॉस कर लेते, विजयी हो जाते।

दूसरी बात कि फिर अगर समझ में न आये कि कैसे अप्लाई करना है, तो फिर ये सोचो कि अगर आज ब्रह्मा बाबा होते तो बाबा क्या करते? बाबा सैम्पल हमारे सामने बहुत सुंदर है और इसलिए अपने जीवन की भेंट बाबा के जीवन से करते हैं। ऐसी परिस्थिति बाबा के सामने आती थी तो बाबा कैसे उसको सुलझाते थे? तो आपका इनर कॉन्शियसनेस (आंतरिक चेतना) जो है, आपको जवाब दे देगा। कहते हैं ना, इनर कॉन्शियस, जो इनरवॉइस है वो कभी आपको गलत नहीं कहेगा। तो इसलिए ये सवाल अपने आप से करते रहो कि अगर बाबा

साकार में होते और बाबा के सामने ये बात आती तो बाबा कौन-सी श्रीमत यूज करके इसको ऑवर कम कर लेते, उसको क्रॉस कर लेते, विजयी हो जाते। बाबा एक मीटर है हमारे लिये। जिसके साथ मैं अपने आपको कम्पेअर करती जाऊँ। उसके साथ धीरे-धीरे, एक-एक बात, कैसे अप्लाई होती जायेगी और हम विजयी रत्न बन जायेंगे ये आप प्रैक्टिकल अनुभव करेंगे।

तीसरी बात ये सोचो कि कौन मुझे कह रहा है? कोई इंसान नहीं कह रहा है। देखो, महाभारत में एक बहुत अच्छी बात बताई कि भगवान अर्जुन को बार-बार गाइडेंस दे रहे थे लेकिन वो समझ ही नहीं पा रहा था। वो अपना तर्क रख रहा था कि इतने लोग मर जायेंगे फिर क्या होगा, फिर इस दुनिया का क्या होगा? अनेक प्रकार के क्वेश्चन करता रहा लेकिन जब उसको विश्व रूप का दर्शन हुआ, जब निराकार हज़ारों सूर्य से तेजोमय का दर्शन हुआ उसके बाद उसको महसूस हुआ कि अरे! ये कौन मुझे कह रहा है? साक्षात् परमात्मा मुझे कह रहा है और एकदम चेंज आ गया, लड़ने को तैयार हो गया। नष्टोमोहा बन गया सहजता से, रिअलाइजेशन हुआ कि जिसको मैं अपना मित्र मान रहा था वो नहीं कह रहा है, लेकिन साक्षात् भगवान मुझे कह रहे हैं। इसी तरह ब्रह्मा बाबा को जब विनाश का साक्षात्कार हुआ तो फिर वैराग्य आया। नई दुनिया का साक्षात्कार कराया तो बाबा ने कहा कि मैं कैसे बना सकता हूँ! मैं एक व्यक्ति सारी दुनिया को कैसे बदलूँगा? ये बाबा के अंदर सवाल उठने लगे लेकिन जिस समय परमात्मा का साक्षात्कार हुआ, परमात्मा का अवतरण हुआ "निजानन्द स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्" कि कराने वाला मैं हूँ। तुम निमित्त हो। तब ब्रह्मा बाबा ने अपने आप सहित सब कुछ सरेंडर कर दिया। सम्पूर्ण परिवर्तन, सम्पूर्ण मरजीवा। एकदम नया जन्म हो गया ब्रह्मा बाबा का और तैयार हो गये करने को। इस तरह हमें भी ये महसूस होना चाहिए कि कौन मुझे कहा रहा है!



धंधुका-गुज. विधायक कालूभाई डाभी, शहर प्रमुख रमेशभाई चौहान, धोलेरा टीडीओ खोदीदासभाई पटेल आदि गणमान्य लोगों के सेवाकेन्द्र में आने पर उन्हें गुलदस्ता भेंट कर व शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. मनीषा बहन।



अहमदाबाद-वटवा। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं डॉ. अमरतलाल महेश्वरी, ओनर, मातुछाया हॉस्पिटल, वटवा एवं प्रेसिडेंट, मणिनगर एसोसिएशन, पशुपतिनाथ भाई, एडवाइजर, एलआईसी, अमीनेश यादव, चार्टर्ड अकाउंटेंट, बीओएसीएच तथा परमात्मा का सत्य परिचय देते हुए ब्र.कु. तारा बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बाक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, अजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

OR

Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087



व्यावरा-म.प्र. 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष चंदर सिंह सोधिया, भाजपा जिला अध्यक्ष दिलवर यादव, नगर पालिका अध्यक्ष पावन कुशवाहा, ब्राह्मण धर्म से आचार्य निलेश शर्मा जी, सिख धर्म से ज्ञाना सिंह जी, इस्लाम धर्म से सेफी बोर, ब्र.कु. मधु दीदी व ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी।



जबलपुर-गोपाल बाग(म.प्र.) 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में संस्कारधानी के सुप्रसिद्ध भागवत वक्ता वासुदेव शास्त्री, क्षेत्रीय पार्षद अतुल जी, सतीश उपाध्याय, डॉ. श्याम रावत, कैसर प्रोफेसर, मेडिकल कॉलेज, पत्रकार पवन पांडेय, जबलपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



तलेगांव दाभाडे-महा. ब्रह्माकुमारीज द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित 'कैलाश पर्वत पर 12 ज्योतिर्लिंग और शंकर के चैतन्य झाँकी दर्शन' का उद्घाटन वरिष्ठ पत्रकार सुरेश साखवळकर एवं लेखक जयंत जोर्वेकर ने किया। इस मौके पर साक्षी डायग्नोसिस के संस्थापक निर्देशक बिजेंद्र किल्लावाला, लायन्स क्लब के पूर्व अध्यक्ष डॉ. शालिग्राम भंडारी, इनरव्हील क्लब अध्यक्ष वैशाली दाभाडे, उद्योजक गणेश खांडगे, राष्ट्रवादी महिला आघाडी अध्यक्ष शैलजा कावळे, पूर्व मेयर मीरा फल्ले, भगिनी बैंक पूर्व मैनेजर मुक्ता जोर्वेकर, उद्योजक रणजीत खांडगे, जी24 तास रिपोर्टर चैत्राली राजापूरकर, आयबीएन लोकमत रिपोर्टर गणेश दुडम, पुढारी न्यूज रिपोर्टर मनोहर दाभाडे, साम न्यूज रिपोर्टर दिलीप कांबळे, उद्योजक गणेश काकडे तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. मीना बहन आदि उपस्थित रहे।

बैंक ऑफ बरोडा
Bank of Baroda

BHIM Baroda Pay

SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP

QR Code

Barcode Name: BHIM The Bharat Shakti

UPI

Paytm



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

जरा सोचें...

सबकुछ गंवाने के बाद भी भाग्य और भगवान सदा साथ रहते...

बाबा के यज्ञ का मंत्र - त्याग, तपस्या और सेवा

जो भी सेवा करें हम वो हमें शुद्ध भाव से करनी है। थोड़ा भी स्वार्थ रखेंगे तो बातें आती हैं। निःस्वार्थ, शुद्ध भाव से सेवा करो। पता है ना, सत्कर्म का फल मिलना ही है। भगवान के यज्ञ की सेवा कर रहे हैं। एक समझदार इंसान भी किसी का कुछ लेता है तो जल्दी वापस करने का सोचता है। समझदार व्यक्ति किसी का लेकर रख नहीं लेता है। बाबा हमारा लेकर रखेगा क्या? वो तो पदमगुणा रिटर्न कर रहा है। एक का पदमगुणा बाबा देते हैं। तो वो तो मिलना ही है ना हमें। अच्छे का

आत्मा बनना है। विकार का कोई अंश मेरे में न रहे, ये साधना है। ये समय अंत का समय है। महापरिवर्तन का समय है। प्रकृति की भी बातें आयेंगी, मानव की भी बातें आयेंगी। हम इस दुनिया के बीच में हैं तो सभी बातें आयेंगी। पर निश्चय हो, बाबा हमारा रक्षक है, बाबा हमारा साथी है। बाबा कहानी बताते हैं ना मुस्लीमों में कि भट्टी में बिल्ली के बच्चे कैसे बच गये...! हम तो बाबा के बच्चे हैं! जो बाबा की श्रीमत् पर चलता है, वो सही सलामत है। हमारे अपने हिसाब-किताब से

नौकरी चली गई, कड़ियों के धंधे ठप्प हो गये। पर जिन्होंने हिम्मत रखी, श्रीमत् को नहीं छोड़ा, और अपनी तरफ से मेहनत करते रहे, फिर उठ गये। तो बातें आती हैं, पर हम पक्का रहें कि हमारा भाग्य और हमारा भगवान हमारे साथ है। सबकुछ गंवाने के बाद भी भाग्य और भगवान तो साथ ही रहते हैं ना! फिर से मेहनत करें, कोई भी छोटा-मोटा धंधा-नौकरी करें। इसमें कोई देह-अभिमान की बात नहीं है।

कोरोना में एक बहुत बड़ा ज्वैलर भाई, बाबा का बच्चा, कमाई नहीं रही तो उन्होंने सब्जी बेचना शुरू किया अपनी सोसायटी में। और फिर एक-दो और भी साथी बन गये। गांव से होलसेल सब्जी लाकर बेचने लगे। फिर उठ गये, फिर कमाने लगे। हमें पाप करने में शर्म करना है, मेहनत करने में नहीं। ईमानदारी से जो कुछ हम कर सकते हैं, वो मेहनत हमें करनी है। इसलिए ऐसा नहीं कि बाबा ने हमें मदद नहीं की, बाबा तो है ही सदा कल्याणकारी। मदद करने के लिए ही तो आया है। बाबा कहते हैं ना कि मैं किसलिए आया हूँ...! मुझे अचल रहना है बस। अवस्था नहीं बिगाड़नी है। तो ये है ज्ञान की शक्ति, योग की शक्ति और एक बल एक भरोसा। बाबा मदद करें तो अच्छा और न करें तो...! हम बाबा से ऐसी इच्छा क्यों रखें! वो कर ही रहा है। उसने पूरे खजाने हमें दे दिए हैं। ऐसा सत्य ज्ञान न होने के कारण पूरी दुनिया भटक रही है। आज हम ठिकाने पर लग गये हैं। लक्ष्य में आ गये हैं। अच्छे पुरुषार्थ में आ गये। ये तो पढ़ाई चल रही है ना! अंत तक पढ़ते रहना है। बाबा की याद में रहना है। निश्चय, नशा सदा बना रहे।

बाबा के यज्ञ का मंत्र है, त्याग, तपस्या और सेवा। ये समय है त्याग का, सेवा का, तपस्या का। आत्म-अभिमानी बनने की तपस्या करो। एक बाबा दूसरा न कोई, ये तपस्या करनी है। कर्मन्द्रियों से अब मुझे कोई भी विकर्म नहीं करना है। ये दृढ़ता अपने में करो। ये तपस्या है।

अच्छा मिलना ही है। आत्माओं से हम इच्छा क्यों रखें! हम आत्माओं से इच्छा रखते हैं। दीदी ने मान नहीं दिया, फलाना आगे आ गया। नहीं, कोई भी आ गया, जाने दो। हम हैं ही महान। बाबा के यज्ञ का मंत्र है, त्याग, तपस्या और सेवा। ये समय है त्याग का, सेवा का, तपस्या का। आत्म-अभिमानी बनने की तपस्या करो। एक बाबा दूसरा न कोई, ये तपस्या करनी है। कर्मन्द्रियों से अब मुझे कोई भी विकर्म नहीं करना है। ये दृढ़ता अपने में करो। ये तपस्या है।

जब बहुत लम्बे समय तक साधना करते हैं, दृढ़तापूर्वक, लक्ष्यपूर्वक तब उसको तपस्या कहा जाता है। लक्ष्य क्या है? मुझे पूर्ण शुद्ध

कुछ नुकसान भी हुआ तो हमारे वर्तमान कर्म अच्छे हैं तो हमारे में सहनशक्ति भी आयेंगी, हिम्मत भी आयेंगी, हम उस परिस्थिति को पार कर लेंगे। ऐसा नहीं, उस समय बुद्धि उलटी हो जाये कि बाबा ने मदद ही नहीं की। मैं बाबा का बना, तो भी मेरा नुकसान हुआ। हम बाबा के बने, तो अच्छी बात है ना! कोई उपकार कर दिया क्या बाबा पर कि हम आपके बने तो आप हमारे पाप नष्ट कर दो, हिसाब-किताब खत्म कर दो। ऐसे थोड़े ही हैं!

कहते हैं ना, एक द्वार बंद होता है तो दूसरे दस द्वार खुलते हैं। हमें अपने भाग्य में विश्वास है। कोरोना में हुआ ना, कड़ियों की



तलेन-म.प्र. 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में थाना प्रभारी, टी.आई. शैलेंद्र चंद्र कर्नाटका, नगर पालिका अध्यक्ष नारायण सिंह यादव, भाजपा जिला महामंत्री नीलम सोनी, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष संजु भट्टार, विधायक प्रतिनिधि मान सिंह यादव आदि अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन।



खजुराहो-म.प्र. महाशिवरात्रि के अवसर पर चैतन्य शंकर पार्वती की झाँकी से युक्त विशाल शिव संदेश शोभा यात्रा निकाली गई जिसका स्थान-स्थान पर व्यापार मंडल अध्यक्ष, जैन समाज, होटल एसोसिएशन के मालिक, नगर परिषद एवं शहर के गणमान्य नागरिकों ने अवलोकन करते हुए स्वागत एवं सत्कार किया। तत्पश्चात् यात्रा के मंतगेश्वर महादेव मंदिर में पहुंचने पर आयोजित कार्यक्रम में खजुराहो के महाराजा विक्रम सिंह जू देव एवं महारानी साहिबा कविता रानी जी, भाजपा नेत्री बहन मयंका गौतम, भाजपा जिला महामंत्री अरविंद पेटेरिया एवं उनकी धर्मपत्नी, नगर परिषद अध्यक्ष अरुण अवस्थी एवं उनकी धर्मपत्नी, खजुराहो मंतगेश्वर सेवा समिति के अध्यक्ष सुधीर शर्मा, ब्र.कु. विद्या बहन, बसंत चतुर्वेदी, सीएमओ साहब आदि महानुभाव शामिल रहे।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.) 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन तथा अन्य।



सैंधवा-म.प्र. नवनिर्वाचित नगर पालिका अध्यक्ष बसंती बाई यादव के सेवाकेन्द्र में आने पर उनका स्वागत करते हुए ब्र.कु. राधा बहन।



भिलाई-छ.ग. महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित 'भोले बाबा की भव्य भारत' कार्यक्रम में मंचासीन हैं राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह, स्थानीय सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी, बॉलीवुड अभिनेत्री रिमी सेन तथा अन्य।



रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.) महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा गढ़ कैलाश स्थित प्रसिद्ध शिव मंदिर पर आयोजित 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी व होलोग्राफिक द्वादश ज्योतिर्लिंग' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए नगर विधायक चैतन्य काश्यप, महापौर प्रहलाद पटेल, भाजपा जिला अध्यक्ष राजेंद्र लुनेरा, पूर्व भाजपा जिला उपाध्यक्ष मनोहर पोरवाल, नगर निगम आयुक्त हिमांशु भट्ट, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य।



गांधीधाम-भारत नगर(गुज.) ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित 'प्रभु मिलन' सेवाकेन्द्र का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. गोदावरी दीदी, मुलुंड सबजोन संचालिका, मुम्बई। इस मौके पर गांधीधाम नगर पालिका प्रमुख श्रीमति ईशिता टिलवानी, ब्र.कु. लाजवंती दीदी, मुम्बई भांडुप सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. मीना दीदी, स्टेज सेक्रेटरी, ब्र.कु. भारती दीदी, आदिपुर सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. सरिता दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. देवेन्द्र भाई, ब्र.कु. बाबू भाई, ब्र.कु. हैप्पी भाई, हरीश टेकचंदानी, इंजीनियर सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



पन्ना-म.प्र. महाशिवरात्रि महोत्सव के शुभारंभ कार्यक्रम में श्रीमति मीना पांडे, अध्यक्ष, नगर पालिका, श्रीमति आशा गुप्ता, उपाध्यक्ष, नगर पालिका, श्रीमति निशा जैन, पूर्व प्राचार्य, शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय पन्ना, डॉ. पीयूष त्रिपाठी, डॉ. देवव्रत सिंह, उत्कर्ष कुमार श्रीवास्तव, प्रभारी प्राचार्य, शासकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज पन्ना, श्रीमति चंद्रप्रभा तिवारी, बीजेपी प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, ब्र.कु. सीता बहन, संचालिका उपसेवाकेन्द्र सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल रहे।



अहमदाबाद-इसनपुर। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित 12 फीट ऊँचे शिवलिंग का दर्शन करने के पश्चात् उपस्थित हैं शिव बहादुर जी, पूर्व प्रेसिडेंट, ऑल इंडिया लायन्स क्लब, डॉ. मुकेश पटेल, डायरेक्टर, महादानी स्पीरिचुअल ट्रस्ट, भास्कर दामानी, सोशल वर्कर, घनश्याम पटेल, बिल्डर, ब्र.कु. जागृति बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

हर व्यक्ति के अन्दर एक खास प्रकृति होती है जो तीन दोषों: वात, पित्त और कफ से परिभाषित होती है। इन दोषों पर कई चीजों का असर पड़ता है जिसमें से एक है ऋतु। गर्मियों का मौसम गर्म होता है, यह हमारी त्वचा को तैलीय बनाता है। गर्मियों में भोजन जल्दी खराब हो जाता है और इससे कसैली गंध भी आने लगती है। यह ध्यान देने वाली बात है कि ये सारी चीजें पित्त दोष के अंदर शामिल हैं।

गर्मियों में शरीर को ठंडा रखने के लिए पित्त दोष को संतुलित करने वाला आहार लेना चाहिए। हम आपको पित्त को संतुलित करने वाले 10 आहार बताते हैं। जिनकी मदद से आप गर्मी के मौसम को हरा देंगे।

नारियल

नारियल पित्त को शांत करता है। आयुर्वेद के मुताबिक नारियल का रस यानी पचाने से पहले का स्वाद और विपाक यानी पाचन के बाद का स्वाद दोनों ही मीठे होते हैं। यह शरीर को ठंडक देते हैं। यह अलग बात है कि ये भारी है और कमजोर पाचन वाले लोगों को इसका सेवन कम मात्रा में करना चाहिए। कार्बोनेटेड पेय के मुकाबले नारियल पानी ज्यादा सेहतमंद पेय है। इसके अंदर वसा, पोटेशियम और जरूरी इलेक्ट्रोलाइट होते हैं। गर्मियों में जब आपको पसीना बहुत आता है, आपका शरीर इलेक्ट्रोलाइट्स को खो देता है, उस समय नारियल पानी के सेवन से आप इलेक्ट्रोलाइट्स को वापस पा सकते हैं और शरीर को पानी की कमी से बचा सकते हैं। विरेचन यानी शुद्धता के पंचकर्म उपचार में नारियल पानी, पंचकर्म आहार का एक हिस्सा है।

तरबूज

यह चमकदार गुलाबी और खीरे के परिवार से जुड़ा रसीला फल सिंधु घाटी सभ्यता के समय से उपजाया जा रहा है। तरबूज खाने से शरीर में ठंडक का एहसास होता है। आप इसका सेवन सीधे काटकर या फिर जूस में इसका रस निकालकर कर सकते हैं। यह एंटी ऑक्सीडेंट्स का एक अच्छा स्रोत है, इसमें 90 प्रतिशत पानी होता है, इसके साथ ही इसमें इलेक्ट्रोलाइट्स भी होते हैं। तरबूज एक प्राकृतिक मूत्रवर्धक है, यह लीवर और किडनी को सेहतमंद

रखता है।

खीरा

आयुर्वेद में खीरे को कभी-कभी सुशीतला भी कहा गया है जिसका मतलब है प्राकृतिक रूप से ठंडा, यह उन मरीजों के लिए फायदेमंद है जिनको मूत्र संबंधित परेशानियां हैं या फिर ज्यादा प्यास लगती है। अपने आहार में खीरे को शामिल करने से आप गर्मियों में ठंडक का एहसास करेंगे। आप अपने लिए खीरे का एक स्वादिष्ट पेय भी तैयार कर सकते हैं, इसके रस में आप पुदीने की कुछ पत्तियां



से विषैले तत्वों को हटाने की आयुर्वेदिक शोधक प्रक्रिया में नींबू का इस्तेमाल किया जाता है।

छाछ

छाछ की तासीर ठंडी है, यह पाचन को बेहतर बनाती है, मल त्याग को आसान बनाती है और पित्त दोष को शांत करती है। छाछ को तैयार करने के लिए एक हिस्सा ताजा दही लें, अगर यह गाय के दूध से बना दही हो तो बेहतर रहेगा, अब इसमें तीन हिस्सा पानी मिलाएं। इसको एक



लें फिर निगलने से पहले अच्छी तरह चबाएं। अलसी के बीज को चबाने से पहले आप ग्राइंडर में इसे पीस भी सकते हैं। अलसी के बीज कब्ज, मोटापे और हाई ब्लड प्रेशर की दिक्कतों में फायदा पहुंचाते हैं। महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान अलसी के बीज का सेवन नहीं करना चाहिए।

घी

आयुर्वेद के मुताबिक घी की तासीर शरीर और दिमाग के लिए ठंडक देने वाली होती है। सही मात्रा में घी का सेवन पूरे शरीर को पोषण देता है। घी, पित्त दोष को शांत करता है, इसलिए घी का सेवन भोजन से पहले या शुरुआती समय में ही कर लेना चाहिए। यह ध्यान रखें कि घी के सेवन के बाद कुछ भी ठंडा न खाएं, न पिएं जैसे आइसक्रीम या ठंडा पानी। भोजन के दौरान हल्का गर्म पानी पीने की सलाह दी जाती है।



पित्त को संतुलित कैसे करें



डाल लें। इस रस में आधा नींबू निचोड़कर चुटकीभर नमक डाल सकते हैं। एलोवेरा जूस की तासीर भी ठंडी है। खीरा और एलोवेरा दोनों ही पित्त दोष को संतुलित करने वाले माने जाते हैं।

नींबू

गर्मियों में लोग नींबू पानी क्यों पीते हैं इसके पीछे बड़ी वजह है। यह प्राकृतिक रूप से पसीना लाने वाली औषधि है और यह त्वचा को आसानी से पसीने करता जिससे को ठंडक मिलती है। इसमें पाचन को बेहतर करने के गुण हैं साथ ही यह मुंह को ताजगी देता है। यह कोलेस्ट्रॉल को कम करके हार्ट अटैक से जोखिम को कम करता है। शरीर



मिक्सर में डालें और कुछ देर के लिए चलाएं। अगर ऊपर मक्खन इकट्ठा हो जाए तो उसे निकाल लें। इसमें भुना हुआ जीरा, एक चुटकी काला नमक या साधारण नमक और थोड़ा-सा धनिया पाउडर मिला लें। इसमें थोड़ा-सा हरा धनिया या पुदीने का पेस्ट भी मिला सकते हैं। अगर आप छाछ में ये मसाले नहीं मिलाएंगे तो इसे सादा भी पी सकते हैं।

अलसी के बीज

अलसी के बीज की तासीर ठंडी होती है और गर्मियों के दिनों में किसी भी वक्त इसका सेवन किया जा सकता है। अलसी के बीज को पानी में कुछ देर के लिए भिगो



पुदीना

आयुर्वेद में पुदीने का इस्तेमाल साँस की दिक्कतों, मतली, सिरदर्द और पाचन तंत्र से जुड़ी परेशानियों को दूर करने में किया जाता है। इसका ज्यादातर इस्तेमाल गर्मियों के पेय में किया जाता है क्योंकि इसके अंदर ठंडक देने का प्राकृतिक गुण होता है जो पित्त दोष को संतुलित करता है। मुँह की परेशानियों में भी पुदीना फायदा पहुंचाता है। अपने ताजा फलों के जूस में पुदीना मिलाएं या फिर इसकी चटनी बनाकर खाएं। शरीर से विषैले तत्वों को निकालने के लिए आयुर्वेद की शोधक प्रणाली में पुदीने की चाय पीने की सलाह दी जाती है।



नीम की पत्तियाँ

पित्त दोष को संतुलित करने में ज्यादातर कसैली चीजों को फायदेमंद माना जाता है। नीम की पत्तियों में ठंडक देने वाले गुण होते हैं जो रक्त धातु और खून को साफ करते हैं। नीम की पत्तियां लीवर, पैंक्रियाज की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाती है और रक्त शर्करा के स्तर को सामान्य करती हैं।



मुम्बई-माहिम। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सांताक्रूज सबजोन संचालिका ब्र.कु. मीरा दीदी, नगरसेवक, डॉक्टर्स तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



सिकंदराबाद-वेस्ट मरेडपल्ली (तेलंगाना)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा जिमखाना ग्राउंड में पाँच दिवसीय 66फीट ऊँचे महा शिवलिंग दर्शन का आयोजन किया गया। साथ ही 12 दिव्य ज्योतिर्लिंग दर्शन, आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं स्वस्थ जीवन बनाने हेतु क्लिनिक का भी आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन डॉ. तमिलिसाई सौंदरराजन, राज्यपाल, तेलंगाना एवं पुडुचेरी द्वारा किया गया। इस दौरान स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी, वी.ई.वैद्य्या, रिटा. एक्टिंग चीफ जस्टिस, आ.प्र., मधुकर नायक डी. गरु, सीईओ, सिकंदराबाद कैटोनमेंट बोर्ड, सरिपल्ली कौडल राव गरु, चेयरमैन, लैम्को ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, जी.वी. अंजनेयेलु गरु, फाउण्डर चेयरमैन, शिवशक्ति ग्रुप ऑफ कम्युनिज, चुक्कापल्ली सुरेश गरु, फोर्गनक्स ग्रुप एंड कौन्सिलर जनरल साउथ कोरिया ग्रुप आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। पाँच दिवसीय इस मेले में अनेकानेक प्रतिष्ठित एवं गणमान्य लोगों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोगों ने शिरकत की।



राजकोट-गुज. ब्रह्माकुमारीज द्वारा शास्त्री मैदान में आयोजित नौ दिवसीय 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारीज गुजरात जोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, अध्यक्ष ब्र.कु. पूनम बहन, ईंदौर, राजकोट विधायक दर्शिता शाह, विधायक रमेश तिलाला, मेयर प्रदीप डव, पूर्व राज्यपाल वजूभाई वाला, कलेक्टर अरुण महेश बाबू तथा अन्य गणमान्य लोग।



नवसारी-लून्सीकुई (उ.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित भव्य शिव संदेश शोभायात्रा के शिव उपवन सेवाकेन्द्र पहुंचने पर विधिपूर्वक स्वागत-सत्कार हुआ। इस मौके पर ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. भानु बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



खरगोन-निमाडू रेंज (म.प्र.)। डीआईजी तिलक सिंह के ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में आने पर पुष्प भेंट कर उनका स्वागत करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. किरण दीदी।

आत्मा में पहले से ही मौजूद सतयुगी संस्कार इमर्ज करें...

आज जब हम अखबार देखते हैं तो कहते हैं ये सब तो बढ़ता ही जा रहा है। एक साल बाद का अखबार हम आज ही देख सकते हैं। आज जो हो रहा है ना, एक साल बाद वो छोटा लगेगा। इस समय वातावरण जो हमारी सृष्टि का है, देश का है, हमारे शहर का है, वो थोड़ा-



ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

किया, पाँच ने किया, दस ने किया, फिर तो ये नॉर्मल हो गया। तो जैसे ही वो नॉर्मल हो गया, उसके करने की संख्या बढ़ती गई। अगर वो चीज़ निगेटिव में अप्लाइ होतो है तो वो पॉजिटिव में भी एप्लिकेबल है। लोग हैरानी से देखेंगे आपकी तरफ। उसने आपको इतना बड़ा धोखा दिया और आपने माफ कर दिया। बड़े अजीब हो आप, तो कहना हाँ जी, अजीब हूँ। लोग अजीब कहेंगे अभी, लेकिन इस फेज को हमने क्रॉस करना है। क्योंकि हमें पता है जो हम कर रहे हैं, सही है।

जो आत्माएं सतयुग में थीं, कलियुग तक पहुंचते-पहुंचते थक गईं, मैली भी हो गईं, गंदी भी हो गईं, लेकिन वो ही आत्मा अब क्लीन-क्लीन होगी, फ्रेश होगी, चार्ज होगी और वो ही आत्मा सुबह के लिए फिर से तैयार हो जाएगी।

सा भारी है। आने वाले समय में और भारी हो सकता है। लेकिन उसमें रहते हुए हमें अपने को बचाना है, फिर हम अपने परिवार को बचाएंगे। फिर हम अपने काम के क्षेत्र पर लोगों को बचाएंगे और ये करते-करते हमारे शहर का और सृष्टि का वातावरण बदल जाएगा। पहले किसी एक ने गुस्सा किया होगा, तब आज हम सब गुस्सा करते हैं। डिबोर्स भी पहले कभी किसी एक ने दिया होगा, यह कोई ज़्यादा पुरानी बात नहीं है। पचास साल पहले तक शादी करके भेजा हो बेटी को तो उसको पता था कि उसको वहीं रहना है। बीस साल पहले भी यही पता था लेकिन अब नहीं पता होता है। अब उसको यही पता है कि प्रॉब्लम आ गई तो वापिस आ जाना। बीस साल पहले तक ये ऑप्शन नहीं था। तो किसी एक ने

क्या हमें वो स्पेशल वाली आत्मा बनना है, जो सतयुगी संस्कारों को इस सृष्टि पर फिर से लेकर आएगी? सतयुगी संस्कार हर आत्मा के अंदर ऑलरेडी रिकॉर्डेड हैं। सुबह हुई, दोपहर हुई, थोड़ी देर बाद शाम होगी, फिर रात होगी। रात के बाद फिर सुबह होगी। इसी तरह इस सृष्टि पर सतयुग था, फिर त्रेतायुग आया, फिर द्वापरयुग आया, फिर कलियुग आया। अभी तो हम कहते हैं घोर कलियुग। तो घोर कलियुग के बाद कोई और युग नहीं है? साइकल रिपीट हो जाता है। घोर कलियुग के बाद फिर सतयुग आएगा। जो आत्माएं सतयुग में थीं, कलियुग तक पहुंचते-पहुंचते थक गईं, मैली भी हो गईं, गंदी भी हो गईं, लेकिन वो ही आत्मा अब क्लीन-क्लीन होगी, फ्रेश होगी, चार्ज होगी और वो ही आत्मा सुबह के लिए फिर से तैयार हो जाएगी।

सतयुग में जो आत्माएं थीं, वो अभी यहीं

पर होंगी। अपने आपसे कहना है, मुझ आत्मा के पास सतयुग वाले संस्कार ऑलरेडी थे। अगर हम अभी सुबह फ्रेश हैं, रात को थककर मैले हो जाएं और रात को कोई हमें कहे बस थोड़ी देर में आप एकदम फ्रेश हो जाएंगे फिर से। अगर किसी ने सुबह से रात तक की जर्नी देखी नहीं होगी, वो रात को विश्वास नहीं करेगा कि थोड़ी देर में फ्रेश हो सकता है। कहेगा, अब तो मैं बिल्कुल थक चुका हूँ। कोई कहेगा कुछ नहीं अभी आप थोड़ी देर में देखना फ्रेश हो जाओगे। क्योंकि हमने वो साइकल नहीं देखा लेकिन जिसने देखा है उसको पता है।

परमात्मा आकर हमें कहते हैं एक समय था आप बिल्कुल फ्रेश थे, प्युअर थे, डिवाइन थे। इतने डिवाइन थे कि आज भी उन डिवाइन चित्रों की मंदिरों में पूजा हो रही है। वो जो देवी-देवता थे जिनकी हम पूजा कर रहे हैं, वो आज कहाँ हैं। वो जो सतयुग में आत्माएं थीं, वो कलियुग में कहाँ हैं? अब अपने आपसे पूछना हम कौन हैं। हम वो देवी-देवता हैं जो थक गए हैं। जो सुबह चार्ज्ड थे, रात तक आते-आते थक गए। अब जब हम थके हुए हैं और परमात्मा कहता है अभी आप थोड़ी देर में ऐसे देवता बन जाओगे, तो हम कहते हैं ऐसे थोड़े हो सकता है। हम विश्वास नहीं कर सकते, क्योंकि हम अपने आपको उससे बहुत दूर देखते हैं। कहाँ वो और कहाँ हम। लेकिन ऐसा होता है, और ऐसा ही हमारे साथ होना है। वो संस्कार जो मुझ आत्मा में रिकॉर्डेड थे, वो अभी भी हैं।



ग्वालियर-मोहना(म.प्र.)। महाशिवरात्रि महोत्सव के अंतर्गत नगर में जन जागरूकता रैली निकाली गई जिसमें नगर वासियों को व्यक्ति और बुराई छोड़ने तथा स्वच्छता का संदेश दिया गया। रैली के समापन पर स्थानीय सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में मोहन सिंह राठौर, वरिष्ठ भाजपा नेता, परमानंद मिश्रा, जिला उपाध्यक्ष हिंदू जागरण मंच, सतेंद्र धाकड़, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, ममता भदौरिया, भाजपा अध्यक्ष महिला मोर्चा, शिवसिंह गुर्जर, सरपंच भमरपुरा, अहसान खान, वरिष्ठ नेता, वीरेंद्र राव, पार्षद मोहना वार्ड 09, सीताचरण कटार, वरिष्ठ भाजपा नेता, कमल भदौरिया, समाजसेवी, रामलखन सिकरवार, समाजसेवी, मुन्ना चौबे, पार्षद मोहना वार्ड 02, ब्रह्माकुमारीज लश्कर ग्वालियर की संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन आदि उपस्थित रहे।



जावरा-म.प्र.। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर 'शिव संदेश' का विमोचन करते हुए सुशील कोचड़ा, नगर पालिका उपाध्यक्ष, हंसराज सिंह टक्कर, धर्मगुरु पंजाबी समाज, एन.के. चारी, एसडीओ कृषि विभाग, ब्र.कु. सावित्री बहन तथा अन्य।



खरगोन-म.प्र.। नगर परिषद मण्डलेश्वर द्वारा 'नशा मुक्ति अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में नशे के दुष्प्रभावों के बारे में बताते हुए ब्र.कु. मंगला बहन। इस मौके पर नगर परिषद कार्यालय के नोडल अधिकारी संजय करोसिया, उपाध्यक्ष प्रतिनिधि हरि गाड़गे, स्वच्छता प्रभारी महेश पाटीदार सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। नशे के विरुद्ध बिलासपुर पुलिस द्वारा चलाए जा रहे अभियान 'निजात' के अंतर्गत स्व. लखीराम सभागार में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में ब्र.कु. मंजू दीदी, पुलिस महानिरीक्षक बी.एन. मीणा, पुलिस अधीक्षक संतोष सिंह, आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षक प्रितपाल सिंह, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत द्विवेदी, पूर्व अध्यक्ष डॉ. अभिजीत रायजादा, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, रोटीरी क्लब आदि अनेक संस्थान के गणमान्य लोग, एनसीसी, एनएसएस, स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राएं आदि बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।



राजनांदगांव-छ.ग.। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर विशाल शोभायात्रा का शुभारंभ करते हुए महापौर हेमा देशमुख, पूर्व सांसद मधुसूदन यादव, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



मुम्बई-घाटकोपर। मुम्बई के ताज महल होटल में आयोजित 7वें 'वर्ल्ड मेंटल हेल्थ एंड वेलनेस कांग्रेस एंड अवॉर्ड्स' में ब्र.कु. निकुंज भाई, इंटरनेशनल कॉलमनिस्ट एंड नेशनल कोऑर्डिनेटर ऑफ मीडिया विंग, ब्रह्माकुमारीज को उनके 7500 से अधिक प्रकाशित लेखन और उपदेशों के माध्यम से सामाजिक, विशेष रूप से युवाओं के मध्य मूल्यों को रखने के कारण उन्हें 'मोस्ट प्रॉमिनेंट लीडर इन मेंटल हेल्थ' अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।



पुणे-पिंपरी(महा.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व महापौर एवं राष्ट्रवादी कांग्रेस शहर अध्यक्ष संजोग वाघिरे, नगरसेवक संदीप वाघिरे, उषाताई वाघिरे, सामाजिक कार्यकर्ता संगीता तापकिर, कीर्तनकार शारदा मुंडे, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा बहन तथा अन्य।



वडोदरा-मंगलवाडी(गुज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए दायें से ब्र.कु. रिया बहन, योगाचार्य हरीश भाई वैद्य, बिमल भाई भायाणी, जीएसएफसी यूनिवर्सिटी के एडवाइजर, हेमंत शाह, बिजनेसमैन, ब्र.कु. राज दीदी, बालकृष्ण शुक्ल, चीफ व्हिप ऑफ गुजरात विधानसभा, प्रो. सुनील कहार, एम.एस. यूनिवर्सिटी, ज्वेलर्स सुनील गणदेवीकर, बिजनेसमैन तथा अन्य।



गांधीधाम से.28-गुज.। महाशिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कैलाश दीदी, गांधीनगर विधानसभा सभ्य रीटा पटेल, काउंसलर सोनाली बहन एवं दीपिका बहन, केपिटल ऑफसेट्स एवं केपिटल वर्तमान पेपर के मालिक रमेश पटेल, पूर्व फॉरेस्ट ऑफिसर एवं उद्योगपति दिनेश चावडा, ओमशांति स्कूल के मालिक एवं मोरबी समाज सेवाकेन्द्र के संचालक ठाकरसीभाई पटेल सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे। इस मौके पर विशाल चैतन्य झंकी युक्त रैली भी निकाली गई।

परमात्म ऊर्जा

कथा सरिता



फिर कार में बैठ जाता है।

कार में बैठने के बाद वो आदमी उस लड़के से पूछता है कि क्या तुम्हें मेरी कार बहुत पसंद आयी? लड़का बोलता है हाँ। फिर वो आदमी उस लड़के

अब वो आदमी उस लड़के को कहता है कि मुझे पता है कि तुम इस वक्त क्या

सोच रहे हो। वो लड़का कहता है बताइये मैं क्या सोच रहा हूँ? वो आदमी कहता है कि तुम यही सोच रहे हो कि काश मेरा भी कोई बड़ा भाई ऐसा अमीर होता तो अच्छा होता।

तभी वो लड़का कहता है कि गलत, मैं वैसा नहीं सोच रहा हूँ। वो आदमी उसे पूछता है तो फिर तुम इस वक्त क्या सोच रहे हो? वो लड़का बोलता है कि मैं ये

सोच रहा हूँ कि काश मैं एक अमीर आदमी होता जो अपने छोटे भाई को कार गिफ्ट करता। ये बात सुनकर वो आदमी सुन्न हो जाता है।

शिक्षा : इससे ये सीख मिलती है कि हमें हमेशा बड़ा ही सोचना चाहिए।

सोच का फर्क...



एक बार एक लड़का एक खिलौने बेचने वाले के पास खड़ा था। उसी वक्त वहाँ से एक कार आकर रुकती है। उस कार में से एक आदमी निकलता है। वो आदमी देखता है कि वो खिलौने बेचने वाला निराश था और उसे लगता है कि उसको खिलौने खरीदने चाहिए। वो आदमी खिलौने खरीदता है और वापिस अपनी कार में बैठ जाता है।

कार में बैठने के बाद उसे वो लड़का दिखाई देता है जो खिलौने बेचने वाले के पास खड़ा था। वो आदमी देखता है कि वो लड़का उसकी कार की ओर गौर से देख रहा था।

वो आदमी कार से बाहर निकलता है और फिर उस लड़के को पूछता है कि क्या तुम इस कार में बैठना पसंद करोगे? वो लड़का जल्दी से हाँ बोलता है और

से पूछता है कि क्या तुम मेरे साथ इस कार में आगे तक चलो? वो लड़का कहता है, जी ज़रूर।

वो दोनों कार में साथ जा रहे थे तभी उस आदमी ने उस लड़के को कहा कि मुझे ये कार मेरे बड़े भाई ने गिफ्ट की थी। वो लड़का मुस्कुराता है।

एक दिन दादा जी घर में उदास बैठे थे। दादा जी को उदास बैठे देखकर बच्चे ने पूछ ही लिया कि क्या बात है दादा जी आप इतने उदास क्यों हो?

दादा जी ने कहा बेटा कुछ नहीं बस यूँही अपनी जिंदगी के बारे में सोच रहा था। बच्चे ने कहा दादा जी मुझे भी बताओ अपनी जिंदगी के बारे में।

दादा जी थोड़ी देर सोचते रहे और फिर उन्होंने कहा कि जब मैं छोटा था तब मेरे ऊपर किसी भी प्रकार की जिम्मेदारियाँ नहीं थी और मेरी कल्पनाओं की भी कोई सीमा नहीं थी। मैं तब

और मैंने ये सोचा कि मैं दुनिया नहीं बल्कि सिर्फ अपने देश को बदलूँगा।

मैं थोड़ा और बड़ा हुआ और समय भी बीता तब मुझे अपने देश को बदलना भी मुश्किल लग रहा था। मैंने सोचा कि देश में बदलाव लाना कोई मामूली बात नहीं है और मैंने अपना लक्ष्य और भी छोटा कर दिया।

मैंने अब तय किया कि मैं सिर्फ अपने परिवार और करीबी लोगों को बदलूँगा। पर समय बीतता चला गया और अफसोस मैं वो भी नहीं कर पाया।

अब तो मैं सिर्फ इस दुनिया में कुछ

बदल पाता।

इतना बोलते-बोलते दादा जी की आँखें नम हो जाती हैं और वो अंत में बच्चे से बोले कि तुम बेटा ऐसी गलती मत करना। तुम कुछ और बदलने से पहले स्वयं अपने आप को बदलना। अगर तुम अपने आप को बदलोगे तो दुनिया अपने आप बदल जाएगी।

वैसे तो हम सभी में दुनिया बदलने की ताकत होती है पर उसकी शुरुआत खुद से ही करनी होती है। अगर हमें दुनिया में बदलाव देखना है तो हमें सबसे पहले अपने आप को ही बदलना

बदलने की शुरुआत स्वयं से करें...



दुनिया बदलने के बारे में सोच रहा था।

जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ तब मेरे में पहले से ज़्यादा बुद्धि बढ़ गयी थी और उसके साथ ही मेरी सोच भी बदलने लगी थी। मैं सोचने लगा कि दुनिया बदलना तो बहुत मुश्किल है। इसलिए मैंने मेरे लक्ष्य को थोड़ा छोटा कर दिया

ही दिनों का मेहमान रहा हूँ। आज मुझे ये एहसास होता है कि अगर मैंने केवल खुद को बदलने का सोचा होता तो मैं ऐसा ज़रूर कर पाता और शायद मुझे देखकर मेरा परिवार भी बदल जाता और उनसे प्रेरणा लेकर देश भी बदल जाता और तब शायद मैं इस दुनिया को भी

होगा। हमें अपने आप को और भी बेहतर बनाना होगा और अपने रवैये को सकारात्मक बनाना होगा।

जो चीज़ हम दूसरों में बदलाव चाहते हैं वो हमें पहले खुद अपने आप में बदलनी होगी। हम तभी दूसरों को बदलने में कामयाब रहेंगे।

अभी वायुमण्डल व वातावरण देख कहाँ-कहाँ अपनी रूपरेखा बदल देते हो। इसलिए सफलता कब कैसे, कब कैसे दिखाई देती है। जबकि कलियुग अंत की आत्माएं अपनी सत्यता को प्रसिद्ध करने के लिए निर्भय होकर स्टेज पर आती हैं तो पुरुषोत्तम संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ आत्माएं अपने को सत्य प्रसिद्ध करने में वायुमण्डल प्रमाण रूपरेखा क्यों बनाती हैं? आप मास्टर रचयिता हो ना! वह सभी रचना हैं ना! रचना को मास्टर रचयिता कैसे देखेंगे? जब मास्टर रचता के रूप में स्थित होकर देखेंगे तो फिर यह सभी कौन-सा खेल दिखाई देगा? कौन-सा दृश्य देखेंगे? जब बारिश होती है तो बारिश के बाद कौन-सा दृश्य देखते हैं? मेंढक थोड़े से पानी में महसूस ऐसे करते हैं जैसे सागर में हैं। ट्रां-ट्रां... करते नाचते रहते हैं। लेकिन है वह अल्पकाल सुख का पानी। तो यह मेंढकों की ट्रां-ट्रां करने और नाचने-कूदने का दृश्य दिखाई देगा, ऐसे महसूस करेंगे कि यह अभी-अभी अल्पकाल के सुख में फूलते हुए गये कि गये। तो मास्टर रचयिता की स्टेज पर ठहरने से ऐसा दृश्य दिखाई देगा।

कोई सार नहीं दिखाई देगा। बिगर अर्थ बोल दिखाई देंगे। तो सत्यता को प्रसिद्ध करने की हिम्मत और उल्लास आता है? सत्य को प्रसिद्ध करने का उमंग आता है कि अभी समय पड़ा है? क्या अभी सत्य को प्रसिद्ध करने में समय पड़ा है? फलक भी हो और झलक भी हो। ऐसी फलक हो जो महसूस करें कि सत्य के सामने हम सभी के अल्पकाल के यह आडम्बर चल नहीं सकेंगे। जैसे स्टेज पर ड्रामा दिखाते हैं ना! कैसे विकार विदाई ले हाथ जोड़ते, सिर झुकाते हुए जाते हैं। यह ड्रामा प्रैक्टिकल विश्व की स्टेज पर दिखाना है। अब यह ड्रामा की स्टेज पर करने वाला ड्रामा, बेहद के स्टेज पर लाओ। इसको कहा जाता है सर्विस। ऐसे सर्विसएबुल विजयी माला के विशेष मणके बनते हैं। तो ऐसे सर्विसएबुल बनना पड़े। अभी तो यह प्रैक्टिस कर रहे हैं। पहले प्रैक्टिस की जाती है तो छोटे-छोटे शिकार किए जाते हैं, फिर होता है शेर का शिकार। लास्ट प्रैक्टिकल पार्ट हू-ब-हू ऐसे देखेंगे जैसे यह छोटा ड्रामा। तब एक तरफ जयजयकार और एक तरफ हाहाकार होगी। दोनों एक ही स्टेज पर।



बैकुंठपुर-छ.ग. महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बी.एन. झा, क्षेत्रीय महाप्रबंधक, ब्र.कु. विद्या दीदी, सरगुजा संभाग की क्षेत्रीय निदेशिका, विनय कुमार प्रधान, अति. जिला सत्र न्यायाधीश, श्रीमति रेणुका सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष, अशोक जायसवाल, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष, ब्र.कु. पार्वती बहन, विश्रामपुर सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. मंजू बहन, सूरजपुर सेवाकेन्द्र संचालिका, प्रकाश जायसवाल सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल रहे।



ब्रह्माकुमारीज़ नीमच में... 'खुशियां आपका इंतज़ार कर रही हैं'

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन ने सिखाया खुश रहने का तरीका

नीमच-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'पावन धाम' के समीप पुरानी नगरपालिका के विशाल मैदान में आयोजित 'खुशियां आपका इंतज़ार कर रही हैं' कार्यक्रम का सांसद सुधीर गुप्ता, राजस्थान के पूर्व केबिनेट मंत्री श्रीचन्द्र कृपलानी, न.पा. अध्यक्ष श्रीमति स्वाति चोपड़ा, ग्रुप सेंटर के डी.आई.जी. एस.एल. खूप, आर.टी.सी. के डीआईजी अनमोल सूद, उद्योगपति डी.एस. चौरडिया, संतोष चोपड़ा व समाजसेवी वासुदेव गर्ग आदि ने मुख्य वक्ता जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी दीदी के साथ दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। तत्पश्चात् सांसद सुधीर गुप्ता व नगर पालिका अध्यक्ष ने शिवानी दीदी का स्वागत सत्कार करते हुए मोमेंटो भेंट किया। बोहरा समाज के अली असगर व अन्य सदस्यों सहित 'नगर समस्या व सुझाव ग्रुप' के विवेक खण्डेलवाल, एडिशनल एस.पी. सुंदर सिंह कनेश, अशफाक भाई व डॉ. दीपक सिंहल ने भी शिवानी दीदी को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर ब्र.कु. शिवानी दीदी ने दस हजार से अधिक लोगों से भरी शांतपूर्ण सभा को सम्बोधित

करते हुए कहा कि हम जीवन में किये जाने वाले प्रत्येक कर्म तो करते ही रहते हैं लेकिन हमें हमारे पास अपने खुद के लिए ही समय नहीं है। धन कमाना अच्छा है किन्तु अंत समय साथ में जाने वाला आध्यात्मिक धन तो कमा नहीं पा रहे। सबसे मिलने की हमें फुर्सत है किन्तु खुद से नहीं मिल पा रहे। उन्होंने कहा कि अब हमें खुद से मिलने की ज़रूरत है, खुद को जानने की ज़रूरत है और अपने असली स्वरूप में जीने की ज़रूरत है। इसके साथ ही दीदी ने सभी को अनेकानेक व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक महत्वपूर्ण टिप्स दिये। इस मौके पर सुरक्षा व्यवस्था में तैनात पुलिस बल का ये अनुभव रहा कि यहां हमारे लिए तो कोई काम ही नहीं था। पहली बार हम किसी आयोजन में बैठकर खुद पूरे कार्यक्रम का लाभ ले रहे थे। और कुछ देर में तो ऐसा सन्नाटा हो गया जैसे यहाँ कोई था ही नहीं। कार्यक्रम में ब्र.कु. सुरेन्द्र भाई सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे। आरंभ में बहन वंदना सोनी, भूमिका बोरीवाल व इशा सोनी के द्वारा सुंदर स्वागत नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

महाशिवरात्रि पर 'शिव अवतरण से स्वर्णिम भारत' कार्यक्रम का आयोजन परमात्मा शिव द्वारा सिखाया जा रहा राजयोग सभी को अवश्य सीखना चाहिए

शहर के अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने लिया
कार्यक्रम का लाभ और रखे अपने विचार

वडोदरा-अलकापुरी(गुज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित 'शिव अवतरण से स्वर्णिम भारत' कार्यक्रम में राजीव कुमार सिंधल, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट रिलायंस इंडस्ट्रीज़ वडोदरा ने कहा कि आज

को आत्मा समझ उस अनुसार ज़िन्दगी जीनी है। डॉ. हार्दिक गजेरा, नेफ़ोलॉजिस्ट गुजरात किडनी हॉस्पिटल वडोदरा ने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ से कई सालों से जुड़ा हूँ। मेडिटेशन से जीवन में बहुत हेल्प मिलती है। दवाइयों के साथ मेडिटेशन से हेल्थ अच्छी बन जाती है क्योंकि जैसा हम सोचते हैं वैसा शरीर पर भी असर होता है। अलकापुरी वडोदरा सबजॉन संचालिका डॉ. निरंजना



साइंस तो तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है पर हम पीछे जा रहे हैं। सुबह निकल शाम को जब हम घर पहुँचते हैं तो यह सोचना चाहिए कि हमने कितने लोगों की मदद की। कितने अच्छे कर्म किये। आज इस कार्यक्रम में आकर ऐसा लग रहा है कि हमें अपने मन को पवित्र करने की ज़रूरत है। विपिन पटेल, चेयरमैन, बरोडा प्रोडक्टिविटी काउंसिल, वडोदरा ने बताया कि आत्मा चैतन्य है, भृकुटि में रहती है, यह ज्ञान मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम से मिला है। मैं कई बार मुख्यालय मॉडर्ट आबू भी गया हूँ। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने ज़िन्दगी की स्टेरिंग दूसरों के हाथ में दी हुई है। पर अब स्वयं

दीदी ने कहा कि आज समाज और संसार में अज्ञान का अंधकार छाया हुआ है। कोई भी व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति से दुःख मिलता या सुख मिलता यह भी अज्ञानता है, भ्रान्ति है। दुःख का कारण और निवारण बताते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान सूर्य निराकार परमात्मा शिव है जो प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा ज्ञान और राजयोग सिखा रहे हैं। जिसे सभी को अवश्य सीखना चाहिए। वासना रोड सेवाकेन्द्र संचालिका मीना बहन ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करवाया। नरेन्द्र भाई ने सफल मंच संचालन किया। ब्र.कु. हिरन भाई ने सभी का आभार व्यक्त किया।

महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में सभी महानुभावों के अनुभव...

शिव परमात्मा की स्मृति में किये कार्य अवश्य सफल होते



ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 87वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती (महाशिवरात्रि) के उपलक्ष्य में शिव ध्वजरोहण का कार्यक्रम स्थानीय सेवाकेंद्र संगम भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बिजनेसमैन एवं समाज सेवी पीताम्बर लोकवानी ने सभी को महाशिवरात्रि पर्व की शुभकामनाएं दी और कहा कि परमात्मा शिव की याद से जब हम कोई

कार्य की शुरुवात करते हैं तो निश्चित ही हमें सफलता प्राप्त होती है। फालका बाज़ार चर्च से फादर पवन डेविड ने कहा कि परमपिता परमेश्वर ने हमें रचा उन्होंने कोई भेदभाव नहीं किया। इस सृष्टि पर सभी को समान रूप से नर-नारी का दर्जा दिया। हम सभी उस पिता परमात्मा की संतान हैं हमारा धर्म अलग हो सकता है, मानने का विचार अलग हो

सकता है परंतु हमारे शरीर की संरचना एक है, सभी ईश्वर के बनाये हुए हैं। हम इस संस्था में हम आते हैं शांति को पाने के लिए तो वही शांति हमें सब जगह फैलानी है। राजू फ्रांसिस ने कहा कि हम सभी अनेक प्रकार के सामाजिक कार्य जैसे कि स्कूल बनाना, हॉस्पिटल आदि बनाना यहाँ वहाँ सभी कर रहे हैं अनेक प्रकार के बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजन हो रहे हैं परंतु एक कमी जो महसूस की जा रही है। वह है शांति की और प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आकर हमें वह शांति का अनुभव होता है जिसे हमें अपने जीवन के हर क्षेत्र में लागू करना है और इसके लिए उन्होंने संस्थान का दिल से धन्यवाद दिया। स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. आदर्श दीदी ने सभी को महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं दी और कहा कि यह वह समय है जिस समय पिता परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर हमें दुःखों से छुड़ते हैं तथा सुख-शांति का वर्षा देते हैं। जिसका यादगार हम महाशिवरात्रि मना रहे हैं जिनका यादगार भारतवर्ष में द्वादश ज्योतिर्लिंग के रूप में है। परमात्मा ज्योति स्वरूप है, निराकार है, जन्म-मरण से न्यारे है,

कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण के साथ ही सभी को स्वच्छता का ध्यान रखने, विकारों से मुक्त रहने और सभी को सहयोग देने की प्रतिज्ञा कराई गई ताकि हम अपने जीवन को दिव्य, श्रेष्ठ बना सकें। स्वयं की संपन्नता से देश की संपन्नता में सहयोग देने का दृढ़ संकल्प भी कराया गया।

दुःखहर्ता-सुखकर्ता है। उन पर अक, धतुरा चढ़ाना अर्थात् काम क्रोध, लोभ, मोह, अंकार जो जहर के समान हैं इनको परमात्मा पर अर्पण करना तथा अपने जीवन को दिव्यगुणों से सजाना है। आपने कार्यक्रम के पश्चात् सभी को राजयोग ध्यान के माध्यम से परमात्मा की याद और गहन शांति का अनुभव कराया। कार्यक्रम में जगदीश मकरानी, संतोष बंसल, माधवी, दीपा, बी.एम. सोनी, आर.एम.वर्मा, पवन, रोशनी, जया, दिनेश, पंकज, भगवानदास, रीता, ममता सहित अनेकानेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. प्रहलाद भाई ने किया तथा आभार प्रदर्शन ब्र.कु.डॉ. गुरचरण भाई ने किया।

कहा जाता है कि जब कभी किसी के अहले खानदान की बात की जाती है तो हमेशा उसके व्यवहार को देखकर, वर्तमान स्थिति को देखकर कहा जाता है कि इनके पूर्वज ऐसे ही थे। लेकिन आज अगर हमारे व्यवहार में, हमारी एक-एक चीज में परिवर्तन आया है तो कहा जाता

ऐसे ही हम सभी जो वर्तमान समय में या ध्यान, योग अभ्यास करते हैं उसमें परमात्मा हमें बार-बार एक बात पर विशेष फोकस करते हैं। वो कहते हैं कि अपने पूर्वजपन के संस्कार को इमर्ज करो। कि तुम जब पूर्वज थे, जब तुम पहले ऐसे थे तो तब तुम्हारी स्थिति क्या

वो त्योहार तक ही सीमित है। उसका वर्तमान के साथ कोई सरोकार रह नहीं गया। लेकिन अभ्यास में ये चीज शामिल करने से देखो फायदा क्या होगा! कहा जाता है कि जो पूरा सृष्टि चक्र बना इसके अन्दर परमात्मा हम सबको सिखाते हैं कि जितने भी धर्म आये, धर्म

आज वर्तमान में वो भी हैं और हम भी हैं क्योंकि कई सारे जन्म हमने लिए। आज वो वाली स्थिति देखकर कि हमारे पुराने स्वरूप को परमात्मा ने याद दिलाकर अच्छा बनाया। तो कहा उनको देखकर जो हमारे अन्दर विचार चलते हैं कि आज हर धर्म में कितनी सारी गिरावट

आ गई है। आज देखो लोग क्या-क्या कर रहे हैं। तो उसको देखकर हमारे थॉट चल जाते हैं, हमारे अन्दर की स्थिति बदल जाती है, हमारे विचार बदल जाते हैं, हमारी भावनाएँ बदल जाती हैं और उससे हमारी स्थिति खराब हो जाती है। तो जब हम बार-बार इस स्थिति को

इमर्ज करते हैं, बार-बार अपने आपको पूर्वज मानते हैं तो उनको स्वीकार करना इजी हो जाता है। उनको एक्सेप्ट करना इजी हो जाता है कि नहीं हम इनको तभी बदल सकते हैं जब अपने उस संस्कार को इमर्ज कर पायेंगे, ले पायेंगे या रख पायेंगे कि मैं सच में पुरानी आत्मा हूँ। पहले से हम इस धरती पर आये थे। धीरे-धीरे आज हम इतने वीक हो गये, कमजोर हो गये कि आज हम किसी को स्वीकार नहीं कर पा रहे।

तो बीज परमात्मा है, हम उसके बच्चे हैं। और हम बच्चों को परमात्मा ने कहा

कि अगर अ प न ए आप के हमेशा इस कल्प वृक्ष में सबसे नीचे मानेंगे तो आप आने वाली



डॉ. अनुज भाई, दिल्ली

आत्माओं को स्वीकार कर पायेंगे। और उनको फिर से उन्हीं संस्कारों में ले आ पायेंगे जैसा आप चाहते हैं। तो इसको आप प्रैक्टिकल व्यवहार में भी यूज कर सकते हैं। जो भी आपके साथ घर में रह रहा है, ऑफिस में रह रहा है, आस-पास रह रहा है उनको भी यही मान के कि मैं सबसे पहले कोई चीज को अगर फॉलो करूँ, सबसे पहले इस चीज को समझूँ तो दूसरों को स्वीकार करना, दूसरों के साथ रहना, दूसरों के साथ जीना आसान हो जायेगा। और उससे हमारे संस्कार में भी बदलाव आ जायेगा। और जो भी हमारे साथ रहेगा उसको परिवर्तन करने का एक आधार मिलेगा और एक स्पेस भी मिलेगा कि नहीं, मुझे स्पेस दे रहे हैं बदलने के लिए। तो ऐसे पूर्वजपन की स्थिति में आने के बाद हम सभी, सभी आत्माओं को पूरी तरह से स्वीकार करके उनको आगे बढ़ा सकते हैं और खुद भी आगे बढ़ सकते हैं।

पूर्वजों की दास्तान सुनो

है कि इनके पूर्वज ऐसे ही होंगे। दोनों स्थितियों को वर्तमान में देखते हैं और ये किसी से छुपा नहीं है कि कोई भी चीज को बताने के लिए इतिहास का सहारा लिया जाता है। तो इतिहास हमेशा सभी का रहा है। दुनिया में कहते हैं अंग्रेजी में एक कहावत है, लेकिन उसका हिन्दी में अनुवाद ये है कि 'बिना बैकग्राउंड के कोई पिक्चर नहीं होती।' तो इसका अर्थ ये हुआ ना कि सबके पीछे कोई न कोई बैकग्राउंड है। हर विचार के पीछे कोई न कोई उसकी भूमिका है। नहीं तो वो विचार हमारे अन्दर पनपता ही नहीं। तो

थी? तुम ऐसे नहीं थे। तुम साधारण नहीं थे। तुम्हारी सोच बहुत अच्छी थी, उम्दा (श्रेष्ठ) थी। तुम हमेशा से अच्छे रहे हो। तो इस सोच के साथ तुम धीरे-धीरे अपने वर्तमान को भी सुधार सकते हो।

पूर्वजों को आपने देखा होगा कि लोग पूजते हैं, भक्ति में। जाने के बाद उनकी बर्सी मनाई जाती है। बीच-बीच में उनके आधार से कुछ ऐसे त्योहार भी रखे हैं ताकि उनको याद करके, उनके संस्कारों को हम इमर्ज करके फिर से वैसी स्थिति बनायें। लेकिन आज के समय में सिर्फ

पितायें आये, इन सबने आ करके परमात्मा के बारे में बताया और हम सब आत्मायें जो परमात्मा के इस ज्ञान को पूरी तरह से याद करके, फॉलो करके आगे बढ़ रहे हैं उनके अन्दर जब ये भाव पैदा हुआ कि हम सभी सबसे पहले आये। तो हम सबके अन्दर एक चीज परमात्मा ने पैदा कर दी वो है माफ करने के संस्कार, माफी देने के संस्कार, कि अगर मैं पहले आया तो मैं सबका पूर्वज हो गया। ये सारी चीजें बाद में हुईं, बाद में सब आये तो इसका मतलब हम उनके पूर्वज हो गए।

मार्ग पर लाना है। इसमें भी मनुष्य को ये विचार करना चाहिए कि जीवन एक-दो दिन का खेल नहीं है, लम्बी यात्रा है हमें साथ रहना है, परिवारों में मिलकर चलना है कोई भी अकेला नहीं चल सकता है। हमारी बहनों को मैं पहले कहूँगा कि वो कहीं भी अपने अहम भाव को, अपने मैं पन को आड़े न आने दें, लाइफ के महत्व को समझें। इसलिए बेटर यही होगा कि जहाँ मनुष्य रहे चाहे उसे कुछ सुनना पड़े, सहन करना पड़े, कुछ त्याग करना पड़े, वो एडजस्टमेंट की पूरी कोशिश करें। अभी

धीरे-धीरे, गुड फीलिंग के साथ कि मैं सर्वशक्तिमान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तो उसने मुझे विघ्नों को नष्ट करने की शक्ति भी दे दी। तो ये दो संकल्प रोज सवेरे सात बार करेंगे और फिर दिन में भी आधा घंटे का चयन कर लें। भगवान हमारा सच्चा मात-पिता है। वो हमें उन समस्याओं से मुक्त होने के लिए शक्तियाँ अवश्य देता है। तो उसका सुंदर तरीका है कि अपनी इन समस्याओं को प्रभु अर्पित कर दें कि ये हमारी समस्या है हम आपकी संतान हैं, सच्चे मन से हम इसे आपको दे रहे हैं अब आप इसका हल करो, तो उसकी शक्तियाँ आने लगेंगी। और आपको ईश्वरीय मदद महसूस होने लगेगी। बहुत सारे कार्य ऊपर से होने लगेगे। तो हमें पूर्ण विश्वास है कि 21 दिन तक ऐसा करेंगे तो निश्चित रूप से कोई मार्ग निकल जायेगा और आपकी सब चीज ठीक हो जायेंगी।

अच्छी तरह से जानता है कि आप उनकी बहन हैं, वो इसे स्वीकार नहीं कर रहा है और न ही आपके परिवार वाले इसे स्वीकार करेंगे। इसलिए आपको ये विचार छोड़ देना चाहिए। इसके लिए सवेरे उठकर संकल्प शक्ति का प्रयोग करें। उसे आत्मिक दृष्टि से देखें, वो शारीरिक रूप से भी आपका भाई है, इसके लिए दो अभ्यास हैं मैं आत्मा अलग हूँ, ये देह अलग है बिल्कुल इससे न्यारापन और दूसरा व्यक्ति भी आत्मा है। ऐसे जब आत्मिक दृष्टि से देखेंगी तो आपके अंदर जो बहुत लगाव हो गया है, वो समाप्त हो जायेगा। वैसे भी आप राजयोग से जुड़ गई हैं तो अपने को राजयोगी बना दें और जितना प्यार आप मनुष्यों से करती हैं उतना प्यार जरा अपने परमपिता से करके तो देखें। अपना प्यार परमपिता की ओर डायवर्ट कर दें, जो अट्रैक्शन आपको हुआ है वो तेजी से हट जायेगा। फिर देखना जीवन कितना ब्यूटीफुल बन जायेगा और भविष्य चमकने लगेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com



उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न- मेरा नाम अमित है। मेरे परिवार में बहुत सारी समस्याएँ हैं, मेरी माँ जब तक आपका कार्यक्रम देखती है तब तक बहुत खुश रहती है, लेकिन बाद में पास्ट की जो बातें हैं और पारिवारिक जो समस्याएँ हैं चाहे वो मेरी बड़ी बहन के डिवोर्स को लेकर हो या फिर छोटी बहन की शादी को लेकर, उन्हें परेशान करती हैं। मैं भी पिछले चार सालों से गवर्नमेंट जॉब के लिए प्रयास कर रहा हूँ, वो भी मुझे प्राप्त नहीं हो पा रही है। ऐसे में क्या किया जा सकता है?

उत्तर - प्रैक्टिकल समस्याएँ हैं किसी की लड़की जिसकी शादी हो गयी हो, उसका डिवोर्स होने जा रहा हो और एक की शादी नहीं हो रही हो, बच्चे को अच्छी नौकरी नहीं मिल रही हो तो निश्चित रूप में उनके परिवार में टेंशन होगी। लेकिन हम सबको एक सुंदर बात ये कहना चाहते हैं कि परेशान होने से, बहुत टेंशन रहने से, बहुत इरिटेड होने से, ऐसी परिस्थितियों में बहुत निराशा होने से ये सब परिस्थितियाँ बढ़ती हैं। क्योंकि इससे पूरे परिवार की ओर से निगेटिव वायब्रेशन पूरे घर में, चारों ओर फैल रहे हैं। इस तरह से ये अशांति का कारण बन जाता है। इसका स्पिरिचुअल समाधान करना चाहिए।

पहले तो मैं कहूँगा कि जहाँ डिवोर्स की नौबत आई है वहाँ मनुष्य को थोड़ा समझदारी पूर्वक एडजस्टमेंट करने का विचार कर लेना चाहिए। अब जैसा हम चाहेंगे वैसा तो सब जगह नहीं होगा। परिवार मन चाहा तो नहीं मिल सकता। लेकिन जिस परिवार में हम चले गये हैं उसमें हमें ढल जाना चाहिए। ठीक है उसमें कुछ बुराई हो सकती, वहाँ लोगों का व्यवहार उग्र हो सकता है। वहाँ वो बहुत तामसिक हो सकते हैं- जैसे शराब पीने वाले हो, लड़ाई-झगड़ा करने वाले हो, ये बात अलग है। अगर ऐसा भी है तो एक स्ट्रॉन व्यक्ति को ये सोचना चाहिए कि मुझे ये सब बदलना है। अब मुझे इस घर में रहना है। मैं इस घर की मालिक हूँ। मुझे इन सब को समझा-बुझा कर सही

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य भाई



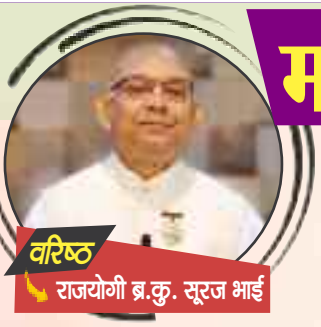
आपके परिवार में विघ्न पड़ रहे हैं। हमारे पास इन विघ्नों को नष्ट करने का एक बहुत अच्छा तरीका रहता है कि ये जो निगेटिव एनर्जी फैल रही है। कोई पास्ट का कर्म सामने आ गया जो पूरे परिवार को इस तरह से कठिनाइयों में डालता जा रहा है, उसको समाप्त करने के लिए 21दिन की योग भट्टी करें, इसको हम कहते हैं विघ्न विनाशक भट्टी। योगबल से अनेक विघ्न नष्ट हो जाते हैं। जिस दिन ये विघ्न नष्ट हो जायेगा तब आपको भी अच्छी जॉब मिल जायेगी। बड़ी बहन की डिवोर्स की बात भी समाप्त हो जायेगी, दोनों में अच्छा मेल-मिलाप हो जायेगा। योग माता जी और पिता जी को दोनों को करना चाहिए क्योंकि बीज वो दोनों है घर के। सात दिन का कोर्स तो कर ही लिया अब आगे राजयोग की प्रैक्टिस भी करें। तो इसमें दो स्वमान पहले याद करना है। उठते ही रोज सात बार मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। विघ्नविनाशक हूँ। बहुत

प्रश्न- मैं संगीता कर्नाटक से हूँ। अभी-अभी दो महीने हुए हैं मैंने राजयोग का कोर्स पूरा किया है। मेरी प्रॉब्लम ये है कि दो साल पहले मेरे फ्रेंड की शादी में मैं एक लड़के से मिली और उससे फ्रेंडशिप हो गयी, लेकिन थोड़े दिन के बाद पता चला कि हम दोनों रिलेटिव हैं। एक साल के बाद मुझे उससे प्यार हो गया और अब मैं चाहती हूँ कि शादी करें, लेकिन जब मैं अपनी बात उसके सामने रखी तो वो कहता है कि नहीं हम रिलेशन में भाई-बहन हैं, हम शादी नहीं कर सकते। लेकिन मैं अपनी फीलिंग्स को जेंज नहीं कर पा रही हूँ। मुझे क्या करना चाहिए? कृपया इसमें मेरा मार्ग दर्शन करें।

उत्तर - हमारा भारत एक महान देश है। यहाँ हमारे समाज की बहुत सारी मर्यादाएँ हैं, उन मर्यादा के विरुद्ध जाने से कभी लाभ नहीं होता है इसलिए जब रिलेशन भाई-बहन का है चाहे वो रिश्तेदारी का ही हो और दूसरा, लड़का इस बात को बहुत

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपको अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल





वरिष्ठ

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

मोह के मोह जाल में न फँसें...

व्यर्थ संकल्प मनुष्य की खुरी के शत्रु हैं। जो श्रेष्ठ ज्ञानी और योगी व्यर्थ संकल्पों पर विजय प्राप्त कर लेता है, वो बन जाता है विजय माला का चमकता हुआ मणका। क्योंकि व्यर्थ संकल्पों को छोड़ बिना योगयुक्त स्थिति तो बन नहीं सकती। हम लगातार चर्चा कर आ रहे हैं और सभी को पूर्ण विश्वास है कि व्यर्थ संकल्पों के प्रकोप को धीमा करते-करते, उन्हें नष्ट करेंगे। आज हम ले रहे हैं मोह के कारण कितने संकल्प चलते हैं मनुष्य को। अब मोह एक ऐसी चीज है जो बड़ा नैचुरल है लाइफ में। एक माँ का अपने बच्चों से मोह, पति-पत्नी के बीच मोह कॉमन-सी बात है, इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं और कोई ये भी नहीं कह सकता कि नहीं होना चाहिए, वो तो होता ही है। वस्तुओं में मोह, जो चीज हमारे पास है, साधन है उनमें मनुष्य की आसक्तियाँ रहती हैं। मोह मनुष्य को दुःख भी बहुत देता है और मन पर एक बुरा प्रभाव भी डालता है।

मान लो माँ के दो बच्चे हैं, बड़े हो रहे हैं, प्यार से रहते हैं, आज्ञाकारी बनकर रहते हैं। माँ को सम्मान देते हैं तो माँ बहुत प्रसन्न रहेगी, गौरवान्वित होगी और यदि वो विरोध करने लगें, यदि वो उल्टा-सुल्टा जवाब देने लगे यानी अनादर करने लगें तो फिर सभी जानते हैं क्या होता है। अब ये व्यर्थ संकल्पों का प्रकोप क्योंकि जिससे इमोशनली मनुष्य जुड़ा रहता है, भावनाओं के साथ जुड़ा रहता है। उसकी हर चीज का गहरा प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है। अब परिवार जहाँ बहुत प्यार होता है बचपन से, वो एक ऐसा सम्बंध है जिसको नकारा नहीं जा सकता, उसको छोड़ा नहीं जा सकता है। और आजकल तो कहीं-कहीं दुविधा ये भी हो गयी है कि लोग न निभा सकते और न छोड़

सकते। क्या करें हम? मोह की रस्सियों को जब तक हम ढीला नहीं करेंगे, ये मोह से उठने वाले संकल्प-विकल्प, व्यर्थ संकल्प हमें परेशान करते ही रहेंगे, हमें दुःखी करते ही रहेंगे और जो मनुष्य दुःखों में होता है उसके मन में विचार तो कम चलते हैं पर न जाने वो क्या सोच लेता है? आजकल बहुत केस हो रहे हैं अचानक मृत्यु और बहुत ही परिवारों को इस बड़ी त्रासदी (दुःख) से गुजरना पड़ रहा है। किसी का पति जा रहा है, किसी का कोई जा रहा है, समय का प्रकोप चल रहा है। हम देखते हैं उन माताओं की, पिताओं

अब परिवार जहाँ बहुत प्यार होता है बचपन से, वो एक ऐसा सम्बंध है जिसको नकारा नहीं जा सकता, उसको छोड़ा नहीं जा सकता है। और आजकल तो कहीं-कहीं दुविधा ये भी हो गयी है कि लोग न निभा सकते और न छोड़ सकते। क्या करें हम?

की उदासीनता, कैसे उदास हो जाते हैं। अकेलापन लगने लगता है, संसार असार लगने लगता है। क्या करें अब? इस स्थिति में संकल्प ज्यादा नहीं होते, लेकिन एक सदमा बैठ जाता है। ये बहुत प्रैक्टिकल बातें हैं, असर आता है। हम ये तो बिल्कुल नहीं कह सकते कि असर नहीं आना चाहिए। आना तो नहीं चाहिए लेकिन इसके लिए तो बहुत परिपक्व स्थिति की जरूरत है। हम अपने मोह को आत्मिक प्रेम में बदलते चलें और ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करें। बिना उसके ये अटैचमेंट बहुत कष्ट देगा। वस्तुओं में हैं, जिन वस्तुओं को, पदार्थों को मनुष्य कमाकर उनका सृजन करता है। बाजार से खरीद के लाता है। मेहनत करके, कमाई करके वो चीजें प्राप्त की हैं। उसमें मनुष्य की आसक्ति होना बड़ा स्वाभाविक है। अगर वो चली जाये, वो छीन जाये, तो व्यर्थ

संकल्पों का बोझ मनुष्य को बेचैन करने लगता है।

किसी के बच्चे अच्छे नहीं निकले, कहीं गलत अफेअर में फँस जायें, कहीं बुरे संग में फँस जायें। बदनामी का डर, भविष्य क्या होगा? बहुत बुरा हाल हो जाता है। तो व्यर्थ संकल्पों का एकदम प्रकोप हो जाता है। उसका जीवन पर बहुत बुरा असर पड़ता है। हम ज्ञान का प्रयोग करेंगे। ज्ञान के प्रयोग से इन बातों को थोड़ा हल्का करेंगे। सम्बंधों में मोह तो होता ही है। लेकिन हम ये न भूलें सबका पार्ट भी अपना-अपना है। सबका भाग्य भी अपना-अपना है। हमसे उनका नाता भी कभी अच्छा है, कभी बुरा है। एक निश्चित समय तक किसी का नाता रहता है। जब वो समय पूरा हो जाता है तो व्यक्ति छोड़कर चल देता है। कोई प्रियजन घर से चला गया, आ नहीं रहा है कितने संकल्प चलते हैं। माताओं के बच्चों स्कूल में चले गये आज एक घंटा हो गया आने के टाइम से, आये नहीं हैं माता की धड़कन तेज हो जाती है। संकल्प-विकल्प बहुत चलने लगते हैं, कहीं कुछ हो तो नहीं गया उन्हें? किसी ने टक्कर तो नहीं मार दी और फिर इससे जुड़े हुए हजारों संकल्प। हमारे जो बहुत संकल्प चलते हैं उनको ठीक करके हम कुछ सुंदर संकल्प मन में क्रियेट करें।

एक बात जो आप ने बहुत सुनी होगी। मेरे साथ सब कुछ बहुत अच्छा होगा। कड़ियों के लोग खो जाते हैं, कोई बेहोश कर देता है, इधर-उधर भटक जाते हैं, एकदम हाहाकार हो जाता है। जब इसका थोड़ा भी आभास होता है, लेकिन मेरे साथ सब कुछ बहुत अच्छा होगा। बाबा बैठा है उल्टे को भी सीधा कर देगा। मुझे अपने शिवबाबा पर पूर्ण विश्वास है। ऐसे नशे में रहकर हम अच्छे संकल्प जितने चलायेंगे, उतना मन हल्का होगा। और हम देखेंगे कि समस्या भी खत्म होती जाती है। याद रखेंगे जितना पॉजिटिव सोचेंगे उतनी समस्याओं का समाधान होगा। हम भी व्यर्थ से बचेंगे और समस्या भी ठीक हो जायेगी।



शापर-वेरावल(गुज.)। बिजनेस एसोसिएशन द्वारा आयोजित सम्मान कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. होना बहन, विधायक रमेश भाई, राज्य की केबिनेट मंत्री भानुबेन बाबरिया, शिक्षा अधिकारी तथा अन्य।



मुम्बई-थाने। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के लाइट हाउस सेवाकेन्द्र द्वारा शिवाई नगर में आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन' मेले के उद्घाटन कार्यक्रम में स्वामी समर्थ मठ शिवाई नगर के अध्यक्ष स्वामी वाधरे जी, बीजेपी महाराष्ट्र के प्रवक्ता अजीत चव्हाण, उद्योगपति सिद्धार्थ पांडे, व्यापारी मंडल अध्यक्ष रामजी पटेल, नगरसेवक सीताराम राने, भाजपा सांसद संजय केलकर, सहायक संदीप नाटे, नवी मुम्बई के पुलिस कमिश्नर राजेश नावेंकर, वास्तु विशेषज्ञ एवं ज्योतिषी संदीप नेने, ट्रैफिक पुलिस सब इंस्पेक्टर शरद पंजे आदि गणमान्य लोगों सहित सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. सरला बहन व अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



भाटापारा-छ.ग.। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव द्वादश ज्योतिर्लिंग झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए निगम मंडल के सदस्य एवं अग्रवाल समाज के अध्यक्ष सतीश अग्रवाल, प्रेम प्रकाश मंदिर के अध्यक्ष एवं चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉ. वासुदेव ठाकुर, ब्र.कु. मंजू बहन एवं ब्र.कु. प्रभा बहन।



भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के ब्लेसिंग हाउस में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. कुसुम बहन, यूएसए।



नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारी के मीडिया प्रभाग द्वारा 'दिव्य संस्कार भवन' सेवाकेन्द्र में 'समाधान परक पत्रकारिता द्वारा मूल्य निष्ठ समाज के निर्माण में मीडिया' विषय पर मीडिया सम्मेलन एवं मीडियाकर्मियों के सम्मान समारोह कार्यक्रम में प्रो. संजय द्विवेदी, महानिदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान, आईआईएमसी नई दिल्ली, राजयोगिनी ब्र.कु. विमला दीदी, जोनल कोऑर्डिनेटर मीडिया प्रभाग इंदौर जोन, राजयोगी ब्र.कु. कोमल भाई, प्रधान संपादक, मधुबन न्यूज, मा.आबू, राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी, जोनल कोऑर्डिनेटर, मीडिया प्रभाग भोपाल सहित जिले के सौ से भी अधिक पत्रकार बंधु उपस्थित रहे।



जबलपुर-बधराजी(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित भव्य महोत्सव का शुभारंभ करते हुए डॉ. रविन्द्र चनपुरिया, पार्षद अर्चना राज सिंह भागरे, ब्र.कु. प्रमिला, ब्र.कु. वनिता तथा अन्य।



इंदौर-रानीबाग(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए इंदौर जोन की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, इंदौर वार्ड क्रमांक 77 की पार्षद प्रियंका चौहान, भवरकुआं थाना के सब इंस्पेक्टर शंकरलाल ठाकुर, शुभदीप आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज इंदौर के प्रिंसिपल डॉ. जयशंकर प्रसाद, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भुनेश्वरी बहन, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य।

ब्रह्माकुमारीज की त्याग, तपस्या, सेवा भारत को विश्व गुरु बनाने में सक्षम

ब्रह्माकुमारीज मेहसाणा सबजोन की ईश्वरीय सेवाओं के 50 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयंती महोत्सव का प्रारंभ

‘शिव अवतरण से स्वर्णिम भारत’ मेले का हुआ भव्य आयोजन



शिवध्वजारोहण करते हुए महामंडलेश्वर डॉ. शिव स्वरूपानंद जी, विधायक मुकेश पटेल, राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी दीदी, ब्र.कु. करुणा भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मेहसाणा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज की त्याग, तपस्या, सेवा भारत को विश्व गुरु बनाने में सक्षम है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित ‘शिव अवतरण से स्वर्णिम भारत’ मेले के उद्घाटन अवसर पर जोधपुर ऋषिकुल धाम के आचार्य पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर श्रीश्री 1008 डॉ. शिव स्वरूपानंद जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों का संयमित और पवित्र जीवन विश्व के लिए आदर्श है। मानव के आध्यात्मिक उत्थान के लिए यह मेला बहुत बड़ी प्रेरणा

देगा। राजयोगिनी ब्र.कु.सरला दीदी ने सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए मेहसाणा की बंजर भूमि पर 50 साल से ईश्वरीय सेवा कर फूलवारी को इतना हरा-भरा करने वाले अपने साथी भाई-बहनों को भी याद किया और आज मेहसाणा सबजोन एक वट वृक्ष कैसे बना इससे भी सबको अवगत कराया। मेहसाणा के विधायक मुकेश पटेल ने

मानव समाज को आध्यात्मिकता एवं सकारात्मक जीवन की प्रेरणा देने वाले इस मेले को देखने की सभी से अपील की। राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी दीदी ने अपने आशीर्वाचन में कहा कि सर्व के सहयोग से यह मेला तैयार हुआ है। यह दर्शाता है कि सहयोग का गुण मानव जीवन में कितना महत्व रखता है। उन्होंने कहा कि हमें आनंद, क्षमा, सहनशीलता

को अपने जीवन में लाने के लिए आत्मा के स्वधर्म शांति में स्थित होना है। ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. करुणा भाई, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु. राजू भाई एवं मेहसाणा के पूर्व सांसद नटुजी ठाकोर ने भी मेले एवं स्वर्ण जयंती के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। तोलानी आर्ट्स एण्ड साइंस कॉलेज की प्राध्यापक ब्र.कु.डॉ. किरण

108 दीप जलाकर मेले का किया गया भव्य शुभारंभ

14 दिवसीय मेले का शहरवासियों ने लिया भरपूर लाभ

मेले में लगाया गया आत्म दर्शन, परमात्म दर्शन, सृष्टि दर्शन, राजयोग दर्शन, शांति अनुभूति, स्वर्ण दर्शन, गोकुल गाँव, कुंभकरण शो, वैल्यू गेम, नव देवियों की चैतन्य झाँकी, व्यसन मुक्ति, महिला सशक्तिकरण, पपेट शो आदि का स्टॉल

मधुर वाणी ग्रुप के ब्र.कु.सतीश एवं ब्र.कु. नितिन ने अपने सुरों से बांधा समा

विभिन्न वर्गों के लिए सेमिनार एवं ब्लड डोनेशन कैम्प का भी हुआ आयोजन

कुमारियों ने दी सुंदर नृत्य की प्रस्तुति

बहन ने सफल मंच संचालन किया। इस अवसर पर हजारों श्रोतागण उपस्थित रहे।

कसडोल में सेवाकेंद्र हेतु भवन का शिलान्यास सम्पन्न

ब्रह्माकुमारीज संस्था लोगों में आध्यात्मिक चेतना जगा रही है- विधायक शकुन्तला साहू

स्थानीय विधायक एवं जनपद अध्यक्ष सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे

क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. हेमलता दीदी ने प्रस्तावित भवन का नाम ‘ज्ञान कमल’ रखा

कसडोल-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा कसडोल शहर में सेवाकेंद्र के निर्माण के लिए



आयोजित ‘भूमि पावन’ समारोह में विधायक एवं संसदीय सचिव शकुन्तला साहू ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान लोगों में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने और शांति प्रदान करने के कार्य में समर्पित है। मैं इस संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू भी गई हूँ। वहाँ पर मुझे गहन शांति की अनुभूति हुई। जनपद अध्यक्ष सिद्धांत मिश्रा ने कहा कि मेरे पिता जी इस संस्थान से जुड़े हुए हैं इसलिए बचपन से ही मेरा इस संस्थान से

विशेष जुड़ाव रहा है। यह भवन जल्दी बने इसके लिए मेरी शुभकामनाएं हैं ताकि शहर के लोग यहाँ आकर शांति का अनुभव कर सकें। क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने कसडोल निवासी भाई-बहनों को बधाई देते हुए कहा कि आप सबके लिए बहुत सुंदर स्थान बन रहा है। इससे पुरुषार्थ में और तीव्रता आएगी। यहाँ पर जो शिक्षा मिलेगी वह दुनिया में और कहीं पर नहीं मिल सकती है। उन्होंने पूर्व क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु.कमला दीदी की पुण्य स्मृति में

प्रस्तावित भवन का नाम ज्ञान कमल रखने की घोषणा की। इन्दौर जोन की ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि दुनिया में नया मकान बनाना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन इस तरह परमात्मा पिता को याद करने का आश्रय स्थल बनाना बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है। रायपुर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, छ.ग. महिला शक्ति संघ की अध्यक्षा वर्षा शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश मीडियम स्कूल की प्राचार्य लक्ष्मी साहू ने सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज ने छत्तीसगढ़ में बहुत विस्तार किया है। इस कार्यक्रम का सफल संचालन ब्र.कु. अदिति बहन ने किया।

ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल विंग द्वारा विश्व शांति सरोवर में डॉक्टर्स के लिए कार्यक्रम

माइंड-बॉडी-मेडिसिन सम्मेलन का आयोजन

नागपुर-मह.। ब्रह्माकुमारीज जामठा के विश्व शांति सरोवर में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय माइंड-बॉडी-मेडिसिन सम्मेलन में राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, अति.मुख्य प्रशासिका एवं निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज यूरोपीय क्षेत्र ने मेडिटेशन एवं पॉजिटिव साइकोलॉजी के बारे में बात करते हुए कहा कि ध्यान का प्रभाव मन पर गहरा होता है इसलिए शोध के बाद यह पाया गया है कि ध्यान करने वाले लोगों के संकल्प सकारात्मक रहे। दीदी ने कहा कि सकारात्मक भावनाएं न केवल मन को बल्कि व्यक्तित्व और स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती हैं। यदि कोई ध्यान में बैठता है तो वातावरण में शांति, प्रेम, सत्य के स्पंदन फैलते हैं। नकारात्मक और व्यर्थ के विचारों का नाश होता है। लेकिन उसके लिए मानसिक विचारों का प्रबंधन जरूरी है। डॉ. बनारसीलाल शाह, सचिव, चिकित्सा विभाग, ब्रह्माकुमारीज ने बताया कि चिकित्सा विभाग की सेवा 1985 में प्रारंभ हुई थी। उस वक्त पूरे भारत से सिर्फ 8 डॉक्टर्स आए। लेकिन हाल ही में हुई बैठक में 4500 सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने नशामुक्ति अभियान, कैड कैम्प, मधुमेह उन्मूलन, कोविड योद्धाओं का सम्मान, तंबाकू उन्मूलन आदि गतिविधियों की समीक्षा की। डॉ. ई.वी. स्वामीनाथन, काउंसलर, मुम्बई ने इस



मौके पर सभी को कुछ प्रेरक दिमागी व्यायाम दिए जिसमें बड़ी सकारात्मकता और आनंद के साथ वाह जिंदगी वाह मंत्र ने सभी को सकारात्मक माहौल के लिए प्रेरित

सम्मेलन में...

शहर के अनेक प्रतिष्ठित डॉक्टर्स हुए शरीक

सभी ने भरपूर लाभ लेते हुए की गहन शांति की अनुभूति

किया। ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता, कार्डियोलॉजी एंड इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट, प्रो. जी.बी.पंत हॉस्पिटल, दिल्ली ने कहा कि राजयोग परिवर्तन की एक अद्भुत यात्रा है। इसकी शुरुआत खुद से करें तो इस सफर में सुख, शांति, आनंद, प्रेम आदि

आदि गुण हमारे साथ चलते रहेंगे। प्रो. डॉ. उषा किरण, एम्स, दिल्ली ने आध्यात्मिकता के साथ अपने जीवन के प्रयोग का एक अनुभवात्मक विवरण दिया। प्रो. ई.वी. गिरीश, कोच और मॉडरेटर ने तनाव प्रबंधन और सकारात्मक सोच पर व ब्र.कु. डॉ. सचिन परब, प्रोफेशनल काउंसलर और कॉर्पोरेट ट्रेनर, मुम्बई ने बैलेंस-ब्लेसिंग एंड ब्लिस विषय पर सम्बोधित किया। उद्घाटन में ब्र.कु. रजनी दीदी, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज नागपुर, ब्र.कु. मनीषा दीदी, उप-संचालिका, डॉ. प्रकाश देव, प्रेसिडेंट, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, डॉ. राज गजभिरे, डीन, गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, नागपुर, डॉ. वनिता जैन, डिप्युटी डायरेक्टर हेल्थ सर्विसेस, डॉ. अभय दातारकर, डीन, गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, नागपुर सहित बड़ी संख्या में प्रतिष्ठित डाक्टर्स शामिल रहे।